पिता का प्रेम

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2026

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org
बाइबल-विश्वासियों की व्याख्या: believersbiblecommentary.com

(Hindi–The Father's Love)

पिता का प्रेम

अथक प्रेम

एपीसी संगीत (apcmusic.org)

जब पहाड़ मेरे मार्ग के सामने खड़े हो जाते हैं
और उनकी छाया मुझे ढक लेती है
मैं सोचता हूँ कौन मेरी पुकार सुनेगा
और मुझे मेरी नियति तक पहुँचने में सहायता करेगा

प्री-कोरस 1

तब मैं अपनी आँखें उठाता हूँ
आपको देखने के लिए, हे परमेश्वर
पृथ्वी और स्वर्ग के रचयिता

मैं जानता हूँ कि मेरी सहायता
आपसे आती है, हे प्रभु
मैं घिरा हुआ हूँ (x2)

कोरस

आपके प्रेम से
आपके अथक प्रेम से
दिन और रात,
आप ऊपर से देखभाल करते हैं

आप मुझे ठोकर खाने नहीं देंगे
आप मुझे गिरने नहीं देंगे
हे अथक प्रेम करने वाले पिता

अंतरा 2

जब मैं दिन के उजाले में होता हूँ
या रात के अंधकार में
मैं आपके पंखों के नीचे ढका रहता हूँ
आप कभी मेरा साथ नहीं छोड़ेंगे

प्री-कोरस 2

इसलिए मैं अपनी आँखें
आप पर लगाए रखता हूँ, हे मेरे परमेश्वर
पृथ्वी और स्वर्ग के रचयिता

मैं जानता हूँ कि मेरी सहायता
आपसे आती है, हे प्रभु
मैं घिरा हुआ हूँ (x2)

ब्रिज

घिरा हुआ, घिरा हुआ, घिरा हुआ आपके प्रेम से (x4)

जीवन से बड़कर

भजन संहिता 63
एपीसी संगीत (apcmusic.org)

अंतरा 1

मेरे खुदा मैं तेरी प्यासी हूं
बंजर बेजान रूह में तू सुकुन
खुदा मेरे मैं तेरे लिए तरसू
निर्बलता में तेरी ही आरज़ू

कोरस

तेरा प्रेम है जीवन से बड़कर प्रभु
तुझमें ही हर जरूरत को में पाऊं
होठों से गाऊं मैं हाथों को ऊठाऊं मैं
तेरा प्रेम है जीवन से बड़कर प्रभु

अंतरा 2

आराधना में तेरे चेहरे को देखूँ
तेरे सामने निशब्द और हैरान हूं
और हमेशा प्रभु धन्य तुझको कहुं
अपने डर तुझको दूं तेरे अनुग्रह से जियूं
तेरा प्रेम है।

ब्रिज

प्रभु तू मेरा प्रभु
ना कोई समान
तेरा प्रेम है महान

विषयसूची

परिचय

1. अनंत परमेश्वर, हमारे स्वर्गीय पिता 1
2. असीमित प्रेम 17
3. हमारे स्वर्गीय पिता का सच्चा चित्र 30
4. पिता के प्रेम को प्राप्त करना 43
5. पिता के प्रेम में बने रहना 61
6. वह प्रेम जो अनुशासन देता है 75
7. हमारे स्वर्गीय पिता के समान बनना 82

परिचय

परमेश्वर के विषय में आपका प्रकटीकरण, परमेश्वर के साथ आपके संबंध को प्रभावित करता है। परमेश्वर के साथ आपका संबंध, दूसरों के साथ आपके संबंध को भी प्रभावित करता है।

बाइबल परमेश्वर के अनेक पहलुओं को प्रकट करती है। इनमें से परमेश्वर के सबसे सामर्थी प्रकटीकरणों में से एक है—पिता के रूप में उनका प्रकटीकरण। परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं। प्रभु यीशु ने हमें परमेश्वर को "हमारे पिता" कहकर पुकारना सिखाया। बाइबल हमारे प्रति पिता के प्रेम को प्रकट करती है। यह पुस्तक पिता के प्रेम पर एक अध्ययन है। परमेश्वर जो प्रेम हमसे करते हैं, उसके विषय में हमारी समझ, इस बात को प्रभावित करती है कि हम परमेश्वर से कैसे प्रेम करते हैं, स्वयं से कैसे प्रेम करते हैं और दूसरों से कैसे प्रेम करते हैं।

पहली आज्ञा यह है कि हम अपने सारे मन, प्राण और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करें। दूसरी यह है कि हम दूसरों से वैसा ही प्रेम करें जैसा हम स्वयं से करते हैं। हम उनसे प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उन्होंने हमसे प्रेम किया। परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम तब और गहरा होता है जब हम यह समझते हैं कि उन्होंने हमसे कितना प्रेम किया है। जब हम समझते हैं कि वह हमसे कितना प्रेम करते हैं, तब हम स्वयं से प्रेम करना सीखते हैं। जब हम स्वयं से प्रेम करते हैं, तब हम दूसरों से भी प्रेम कर सकते हैं। जब हम समझते हैं कि परमेश्वर हमें कितना मूल्यवान मानते हैं, तब हम स्वयं को मूल्यवान समझना शुरू करते हैं। जब हम स्वयं को मूल्यवान समझते हैं, तब हम दूसरों को भी मूल्यवान समझ सकते हैं।

सामान्यतः, हम दूसरों के साथ उसी प्रकार व्यवहार करते हैं जिस प्रकार हम स्वयं के साथ करते हैं। यदि हम स्वयं की आलोचना करते हैं, स्वयं को दोषी ठहराते हैं, तो हम प्रायः दूसरों के साथ भी वैसा ही करते हैं। परमेश्वर के प्रेम की हमारी समझ हमें स्वयं के प्रति तथा दूसरों के प्रति नकारात्मकता से स्वतंत्र करती है।

परमेश्वर, जो हमारे स्वर्गीय पिता हैं, हमसे बिना शर्त और असीम प्रेम करते हैं। हमारे प्रति पिता के प्रेम की सबसे महान अभिव्यक्ति और प्रदर्शन यीशु मसीह का क्रूस है। जब हम हमारे प्रति पिता के प्रेम को जानते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, उसे ग्रहण करते हैं और उसमें विश्राम पाते हैं, तब सब कुछ बदल जाता है। हम चंगे किए जाते हैं, संपूर्ण बनाए जाते हैं और हमारे सारे टूटेपन तथा बंधनों से स्वतंत्र किए जाते हैं। जब हम पिता के प्रेम में जीवन बिताते हैं, तब हम वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हमसे प्रेम किया गया है। हम स्वतंत्रता से परमेश्वर से प्रेम करते हैं। हम स्वतंत्रता से दूसरों से प्रेम करते हैं। हम जयवन्तों से भी बढ़कर जीवन बिताते हैं और ऐसे लोगों के समान जीते हैं जिन्होंने परमेश्वर के अटूट प्रेम के द्वारा जीवन की सभी चुनौतियों और अन्धकार की शक्तियों पर पूर्ण विजय प्राप्त की है।

यह पुस्तक हमें व्यक्तिगत रूप से पिता के प्रेम को जानने और अनुभव करने की यात्रा पर ले जाती है। उन सबसे रोमांचक यात्राओं में से एक के लिए तैयार हो जाइए, जिन पर आप कभी गए हों—परमेश्वर के असीम प्रेम की गहराइयों में जाने की यात्रा।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
अनंत परमेश्वर, हमारे स्वर्गीय पिता

हमारे स्वर्गीय पिता

मत्ती 6:9
अत: तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो:
'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है;
तेरा नाम पवित्र माना जाए।

बाइबल हमें यह प्रकट करती है कि परमेश्वर कौन हैं, इसके अनेक पहलू हैं। इनमें से परमेश्वर का सबसे अद्‌त पहलू यह है कि वह एक पिता हैं। प्रभु यीशु ने हमें यह सिखाया कि हम प्रार्थना करते समय परमेश्वर को "हमारे स्वर्गीय पिता" या "हमारे पिता जो स्वर्ग में हैं" कहकर पुकारें। प्रभु यीशु ने पिता परमेश्वर के लिए प्राय: "स्वर्गीय पिता" और "स्वर्ग में पिता" शब्दों का उपयोग किया।

यह विचार करना कितना अद्‌त और विस्मयकारी है, कि यह अनंत, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी, स्वयं में विद्यमान और अनन्तकालीन परमेश्वर, हमारे पिता बनना चाहते हैं। पिता के रूप में उनका एक परिवार है जिसमें पुत्र और पुत्रियाँ हैं, जिनमें से कुछ स्वर्ग में हैं और कुछ पृथ्वी पर। यह परिवार अपना नाम, अर्थात् अपनी पहचान, उन्हीं से प्राप्त करता है। प्रेरित पौलुस ने लिखा, *"मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है"* (इफिसियों 3:14,15)।

परमेश्वर स्वयं में विद्यमान और स्वयं में परिपूर्ण हैं। परमेश्वर को मनुष्यों की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, अपनी इच्छा और चुनाव से

उन्होंने मनुष्यों की सृष्टि करने का निश्चय किया, जिन्हें वह अपने "पुत्र" और "पुत्रियाँ" बनाना चाहते थे ताकि वह उनके पिता हो सकें।

उन्होंने स्वयं को ऐसी स्थिति में रखा है जहाँ वह एक पिता के रूप में हम पुत्रों और पुत्रियों की लालसा करते हैं। इस अर्थ में, उन्हें हमारी "आवश्यकता" है। वह चाहते हैं कि हम उन्हें पिता के रूप में जानें और उनमें आनन्दित हों।

1 यूहन्ना 4:8
... परमेश्वर प्रेम है।

बाइबल हमें यह भी प्रकट करती है कि परमेश्वर प्रेम हैं। हमारे स्वर्गीय पिता प्रेम हैं। इस अध्ययन के दौरान हम जानेंगे कि परमेश्वर का प्रेम, कैसे बिना किसी शर्त का है। परमेश्वर का प्रेम असीमित है। उनका प्रेम अनंत है। परमेश्वर इस प्रकार प्रेम करते हैं।

अक्सर, जब हम "पिता" शब्द के बारे में सोचते हैं, तो हम इसे अपने सांसारिक माता-पिता और इस बात के साथ जोड़ देते हैं कि उन्होंने हमारे साथ कैसा व्यवहार किया। हममें से कुछ लोगों के अपने माता-पिता / पिता के साथ बहुत अच्छे अनुभव रहे होंगे और इसलिए वे "पिता" शब्द को सहजता से स्वीकार करते हैं। दूसरी ओर, हममें से कुछ लोगों के लिए "पिता" शब्द अप्रिय हो सकता है। हमारे सांसारिक माता-पिता / पिता के साथ हमारे अनुभव पीड़ादायक रहे होंगे और इसलिए हम किसी भी ऐसी बात से घृणा करते हैं जो उन विचारों और स्मृतियों को उभारे।

यह पुस्तक हमारे स्वर्गीय पिता के विषय में है, जो किसी भी सांसारिक पिता से कहीं अधिक महान, श्रेष्ठ और भिन्न हैं। परमेश्वर किसी बुरे सांसारिक पिता के समान नहीं हैं। इसलिए, परमेश्वर को किसी सांसारिक पिता के दृष्टिकोण से मत देखिए। अपने सांसारिक

माता-पिता / पिता के साथ हुए नकारात्मक अनुभवों को, आपको अपने स्वर्गीय पिता को जानने और उनसे प्राप्त करने से दूर न रखने दीजिए। इस अध्ययन में हमारा उद्देश्य हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम को जानना और उसका अनुभव करना है। यह जीवन को बदल देने वाला है। पिता के प्रेम को खोजने और उसका अनुभव करने से किसी भी बात को आपको रोकने मत दीजिए।

परमेश्वर संबंध रखने वाले हैं

यूहन्ना 17:24
हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।

जगत की उत्पत्ति से भी पहले, किसी भी सृष्टि के बनाए जाने से पहले, त्रिएकत्व में प्रेम था। परमेश्वरत्व में प्रेम था। परमेश्वरत्व प्रेम था और है क्योंकि परमेश्वर प्रेम हैं। अनादि काल में—अनंतकाल से—पिता, वचन और आत्मा के बीच प्रेम था।

यह हमें सिखाता है कि परमेश्वर संबंध रखने वाले हैं। परमेश्वर प्रेम करते हैं और उनसे प्रेम किया जा सकता है।

मरकुस 12:29-31
[29]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: 'हे इस्राएल सुन! प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है,
[30]और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'
[31]और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। 'इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।"

प्रभु यीशु द्वारा हमें दी गई पहली आज्ञा यह है कि हम अपने संपूर्ण मन, प्राण, बुद्धि और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करें। इसका अर्थ

है कि परमेश्वर से प्रेम किया जा सकता है। वह हमारे प्रेम को ग्रहण करते हैं। वह अपने प्रति हमारे प्रेम से आनंदित होते हैं। हमारा प्रेम उन्हें स्पर्श करता है। वह अपने प्रति हमारे प्रेम को अनुभव करते हैं। जब हम उनकी ओर देखते हैं और अपने हृदय की सच्चाई से उनसे कहते हैं, *"पिता, मैं आपसे प्रेम करता हूँ," "प्रभु यीशु, मैं आपसे प्रेम करता हूँ," "पवित्र आत्मा, मैं आपसे प्रेम करता हूँ,"* तो वह इसे अनुभव करते हैं।

हम उनकी छवि में सृजे गए हैं। हम संबंध रखने वाले हैं। हम प्रेम कर सकते हैं और प्रेम प्राप्त कर सकते हैं। हमें परमेश्वर से प्रेम करने और लोगों से प्रेम करने के लिए सृजा गया है। हमें प्रेम पाने — प्रेम ग्रहण करने के लिए सृजा गया है।

हमारे संबंध रखने वाले होने और परिवारों में जन्म लेने का एक भाग यह है, कि हम संतान हैं और माता-पिता या एक पिता या माता के प्रेम, स्नेह, पालन-पोषण, प्रोत्साहन और स्वीकार्यता की लालसा रखते हैं।

परमेश्वर ने हमें अपने असीमित, बिना शर्त प्रेम का केंद्र बनाया है

इफिसियों 1:4,5
[4]जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।
[5]और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों,

इफिसियों 1:4,5 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल)
[4]पृथ्वी की नींव डाले जाने से बहुत पहले ही उसने हमें अपने मन में रखा था, और हमें अपने प्रेम का केंद्र ठहराया था, ताकि उसके प्रेम के द्वारा हम संपूर्ण और पवित्र बनाए जाएँ।
[5]बहुत समय पहले ही उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह हमें यीशु मसीह

के द्वारा अपने परिवार में गोद ले लेगा। (इस योजना को बनाकर उसे कितना आनंद हुआ!)

इस संसार की रचना करने से भी पहले परमेश्वर ने यह ठहराया था कि उसके पास लोग होंगे—जो मसीह में चुने गए हैं—जो उसके प्रेम से आच्छादित होकर पवित्र और निर्दोष होंगे। उसने निश्चय किया कि वह उन्हें अपने परिवार में पुत्रों और पुत्रियों के रूप में गोद लेगा, उनका पिता होगा और उन्हें अपने ही नाम से बुलाएगा। यह *"उसकी इच्छा की प्रसन्नता के अनुसार"* था (इफिसियों 1:5)। यही वह बात थी जिसे करने के लिए वह उत्सुक थे और जिसे वह करना चाहते थे।

यह परमेश्वर के उस हृदय को प्रकट करता है जो पुत्रों और पुत्रियों को प्राप्त करना चाहता है। परमेश्वर की इच्छा है कि हमारा उनके साथ एक संबंध और घनिष्ठ सहभागिता हो, जहाँ हम पुत्र और पुत्रियाँ हों और वह हमारे स्वर्गीय पिता हों। यह उनके हृदय की इच्छा जगत की उत्पत्ति से पहले से ही रही है। यही हमारे सृजे जाने का कारण है। परमेश्वर ने हमें इसलिए सृजा ताकि हम उनके पुत्र और पुत्रियाँ बनें और हम उनके असीमित, बिना शर्त प्रेम का केंद्र बनें।

सृष्टि से पहले भी प्रेम था, और प्रेम के कारण ही सृष्टि हुई।

प्रेम किए जाने की हमारी क्षमता को पुनर्स्थापित करना

परंतु हम पाप के कारण टूटे हुए हैं। प्रेम प्राप्त करने की हमारी क्षमता टूट चुकी है। दूसरों से प्रेम करने की हमारी क्षमता भी टूट चुकी है।

क्योंकि प्रेम करने और प्रेम प्राप्त करने की हमारी क्षमता टूट चुकी है, इसलिए हम अनजाने में बहुत सी ऐसी बातें करते हैं जो हमारे अपने भावनात्मक व्यक्तित्व के चारों ओर दीवारें बन जाती हैं। हम स्वयं से कहते हैं कि हम प्रेम के बिना भी जीवन जी सकते हैं। हम लोगों से दूरी बना लेते हैं। हम लोगों को अपने जीवन से बाहर रखते हैं।

हम किसी के बहुत निकट नहीं जाते। हम स्वयं को भावनात्मक रूप से दूसरों से अलग कर लेते हैं। जब यही बात विवाह में भी चली जाती है, तब हम भावनात्मक रूप से अपने जीवनसाथी के भी निकट नहीं आ पाते। भावनात्मक निकटता बहुत कठिन बात बन जाती है क्योंकि हमारी दीवारें या बचाव की प्रवृत्तियाँ खड़ी रहती हैं। फिर एक पिता के रूप में, हम अपने बच्चों को भौतिक वस्तुओं के रूप में अपनी ओर से सर्वोत्तम दे सकते हैं, परंतु हम एक प्रेमी पिता के स्नेह और गर्माहट को व्यक्त नहीं कर पाते। हमारे बच्चे सच्चे निःस्वार्थ प्रेम और स्नेह से वंचित होकर बड़े होते हैं।

विचित्र बात यह है कि प्रेम करने और प्रेम प्राप्त करने की हमारी टूटी हुई क्षमता के कारण, हम जीवन की सभी गलत बातों के साथ "बंधन" या "भावनात्मक जुड़ाव" बना लेते हैं। हम अपने कार्य, करियर, सफलता, प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, स्वीकृति, ध्यान, धन, वस्तुओं आदि से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।

प्रेमी परमेश्वर के सामने गलत दृष्टिकोण

फिर हम अपने टूटेपन के साथ परमेश्वर से संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। परंतु हमारे भीतर कुछ गलत धारणाएँ और भ्रांतियाँ होती हैं, और ये इस बात को प्रभावित करती हैं कि हम परमेश्वर से कैसे संबंध रखते हैं। हम इन गलत विचारधाराओं के आधार पर परमेश्वर से संबंध रखते हैं। ये भ्रांतियाँ और गलत सोच की प्रवृत्तियाँ परमेश्वर के विषय में हमारे समझ को—कि वह वास्तव में कौन हैं—विकृत कर देती हैं। परमेश्वर के विषय में हमारी तस्वीर (धारणा, समझ) बिगड़ जाती है, दूषित हो जाती है और गलत हो जाती है। हम अपने स्वर्गीय पिता परमेश्वर के असीम और निःशर्त प्रेम को स्वीकार, ग्रहण और अपनाने में असमर्थ हो जाते हैं। यह परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में बाधा उत्पन्न करता है।

यहाँ हम **सात गलत दृष्टिकोणों** (भ्रांतियों) पर विचार करते हैं जो हमें परमेश्वर के असीम और निःशर्त प्रेम को समझने से रोकते हैं।

1) उड़ाऊ पुत्र

इस मानसिकता या विचारधारा में लोग स्वयं को सदैव अयोग्य, अनुपयुक्त और किसी के लिए भी पर्याप्त अच्छा नहीं समझते, और निश्चित रूप से परमेश्वर के प्रेम के योग्य भी नहीं समझते। इसलिए, जब वे परमेश्वर से संबंध रखते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को एक प्रेमी और क्षमा करने वाले पिता के रूप में समझना बहुत कठिन होता है।

वे सदैव उस उड़ाऊ पुत्र की तरह सोचते हैं जो अपने पिता के पास जाकर कहता है, *"...अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।"* (लूका 15:19)

जब हमसे गलती हो जाती है तब पश्चाताप करना अच्छा और आवश्यक है, परंतु यह वह मानसिकता नहीं है जिसमें परमेश्वर चाहते हैं कि हम सदैव बने रहें। पिता ने पुत्र के लौट आने पर उत्सव मनाया, उसे उत्तम वस्त्र पहनाए, उसकी उंगली में अंगूठी पहनाई और भोज कराया, और वह चाहते थे कि उनका पुत्र उनका पुत्र ही बना रहे!

जब हम समझते हैं कि हमारे पापों ने क्या परिणाम उत्पन्न किए और यह क्षमा कितनी महान है जो हमें परमेश्वर से प्राप्त हुई है, तब हम बदले में उनसे बिना किसी रोक-टोक के प्रेम करते हैं। प्रभु यीशु ने उस पापिनी स्त्री के विषय में, जो आँसू बहाते हुए उनके पास आई थी, कहा, *"इसलिये मैं तुझ से कहता हूँ कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।"* (लूका 7:47) यह आवश्यक नहीं कि हमारे पापों की संख्या या हमारे द्वारा किए गए पापों की गंभीरता ही मुख्य

बात हो, बल्कि यह समझ कि हमारे पापों ने क्या परिणाम उत्पन्न किए और हमें कितनी क्षमा मिली है, यही हमें उनसे बिना किसी रोक-टोक और उदारता से प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है। जब हमें बहुत क्षमा मिली है, तब हमें अपने स्वर्गीय पिता के प्रति अपना प्रेम उंडेल देना चाहिए। वही उसके योग्य हैं और वही उसकी इच्छा भी रखते हैं।

2) दास

इस विचारधारा में लोगों की मानसिकता सदैव दास जैसी होती है। उन्हें लगता है कि उन्हें सब कुछ कमाना पड़ता है, वे स्वयं को बड़ी बातों के लिए अनुपयुक्त समझते हैं, स्वयं को अयोग्य मानते हैं, और इसी प्रकार की अन्य बातें सोचते हैं। इसलिए, जब वे परमेश्वर से संबंध रखते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना कठिन होता है जो हमें पुत्र और पुत्रियों के रूप में अपनाते हैं, हमें उत्तराधिकार का आनन्द लेने योग्य ठहराते हैं, हमें अपना वारिस और *"मसीह के साथ सहभागी वारिस"* (रोमियों 8:17) कहते हैं।

परंतु बाइबल हमें स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर नहीं चाहते कि हम दासों के समान व्यवहार करें।

रोमियों 8:15
क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

रोमियों 8:15 (कन्टेम्पररी इंग्लिश वर्शन अंग्रेजी बाइबल)
"परमेश्वर की आत्मा हमें ऐसे दास नहीं बनाती जो उनसे डरें। इसके बजाय, हम उनकी सन्तान बन जाते हैं और उन्हें अपना पिता कहकर पुकारते हैं।"

रोमियों 8:15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल)
"क्योंकि जो आत्मा परमेश्वर ने आपको दी है वह आपको दास नहीं बनाती और न ही आपको भयभीत करती है; बल्कि वह आत्मा आपको परमेश्वर की

सन्तान बनाती है, और उसी आत्मा की सामर्थ्य से हम परमेश्वर को पुकारते हैं, 'हे पिता! मेरे पिता!'"

गलातियों 4:4-7
[4]परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ,
[5]ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का वचन मिले।
[6]और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है।
[7]इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

3) अनाथ

जिन लोगों की यह मानसिकता होती है, वे स्वयं को पिता-विहीन, त्यागे हुए समझते हैं; उन्हें लगता है कि उनसे कभी प्रेम नहीं किया गया और कभी प्रेम नहीं किया जाएगा। उन्हें कभी यह अनुभव नहीं हुआ कि वे किसी के अपने हैं। उन्हें लगता है कि वास्तव में किसी को उनकी परवाह नहीं है। इसलिए, जब वे परमेश्वर से संबंध रखते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को एक प्रेमी और देखभाल करने वाले पिता के रूप में समझना अत्यन्त कठिन होता है।

उद्‌धत किए गए दोनों पवित्रशास्त्र के संदर्भ—रोमियों 8:15 और गलातियों 4:4-7—फिर से यह स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनसे पुत्रों और पुत्रियों के समान संबंध रखें और उन्हें "पिता" कहकर पुकारें। परमेश्वर नहीं चाहते कि हम "आत्मिक अनाथों" के समान महसूस करें या जीवन बिताएँ, बल्कि उनकी अपनी सन्तान के रूप में जीवन बिताएँ।

4) बहिष्कृत

इस मानसिकता में लोगों के भीतर अस्वीकृति की गहरी भावना होती

है। वे सदैव स्वयं को दूर खड़ा हुआ, अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ और बहिष्कृत महसूस करते हैं। इसलिए, जब वे परमेश्वर से संबंध रखते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना बहुत कठिन होता है जो उन्हें अपनी उपस्थिति में स्वीकार करते हैं, जो उन्हें साहस और स्वतंत्रता के साथ अपने पास आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

इफिसियों 2:12,13,18

[12]तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्राएल की प्रजा के वचन से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे।

[13]पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।

[18]क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है।

बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि यीशु मसीह के लहू के द्वारा हमें परमेश्वर के निकट लाया गया है। यीशु के द्वारा हमें परमेश्वर की उपस्थिति में स्वतंत्र प्रवेश मिला है। हम बहिष्कृत नहीं हैं। उनकी उपस्थिति में हमारा स्वागत है। हम साहस के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास आ सकते हैं (इब्रानियों 4:16)।

5) घमण्डी बड़ा भाई / बहन

जिन लोगों की यह विचारधारा होती है, उनमें घमण्ड की भावना होती है। वे सोचते हैं, "मुझे कभी प्रेम नहीं मिला, और मुझे प्रेम की आवश्यकता भी नहीं है।" वे जो कुछ करते हैं, उस पर गर्व करते हैं— "मैं विश्वासयोग्य हूँ, मैं अपना कार्य करता हूँ," आदि। सब कुछ कार्य और जिम्मेदारियों पर आधारित होता है। इसलिए, जब वे परमेश्वर से संबंध रखते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना कठिन होता है जो हमें अपने प्रेम में विश्राम करने, केवल

उनका आनन्द लेने और यह जानने के लिए बुलाते हैं कि वह भी हममें आनन्दित होते हैं।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी में घमंडी बड़े भाई को यह सहन नहीं हुआ जब उसने सुना कि उसका पिता भटके हुए पुत्र की वापसी का उत्सव मना रहा है। उसने अपने उत्तम आचरण और एक अच्छे पुत्र के रूप में अपनी सभी जिम्मेदारियों को पूरा करने का हवाला देते हुए शिकायत की। परन्तु जो कुछ पिता का था, वह सब उसका ही था। बकरा, भोज और उत्तम भोजन हमेशा से वहाँ थे, फिर भी बड़े पुत्र ने कभी उनका आनंद लेने का प्रयास नहीं किया। अपने पिता और परिवार के साथ उसका संबंध केवल काम पर आधारित था, उसमें संबंध, परिवार और घर में पुत्र होने के विशेषाधिकारों का आनंद लेने की कोई भावना नहीं थी।

लूका 15:29,30
[29]उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूँ और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।
[30]परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने पला हुआ पशु कटवाया।

यीशु की मरियम और मार्था से मिलने की घटना (लूका 10:38-42) भी इसी प्रकार की समझ को प्रकट करती है। मार्था स्वामी की सेवा करने में इतनी व्यस्त थी कि उसने उनकी उपस्थिति का आनंद लेना और उनकी शिक्षा से प्राप्त करना उपेक्षित कर दिया। उसने मरियम की शिकायत की, जो उस अवसर का लाभ उठाकर स्वामी के वचनों को ग्रहण कर रही थी और अपने घर में उनकी उपस्थिति का आनंद उठा रही थी। मार्था की यह गलत मनोवृत्ति अक्सर हमें उन लोगों के प्रति आलोचनात्मक और दोष लगाने वाला बना देती है जो उनकी उपस्थिति का आनंद लेते हैं, ठीक फरीसियों के समान।

मरकुस 14:3-5
[3]जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था, तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उंडेला।
[4]परन्तु कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, "इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया?
[5]क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जा कर कंगालों में बाँटा जा सकता था।" और वे उसको झिड़कने लगे।

6) घायल लोग

ये वे लोग हैं जिन्हें चोट पहुँची है, सम्भवतः एक से अधिक बार, और इसलिए अपने भीतर पीड़ा और घाव लिए हुए हैं। वे कभी किसी को अपने से प्रेम नहीं करने देंगे और न ही स्वयं किसी से प्रेम करने का प्रयास करेंगे। वे प्रेम करने और प्रेम पाने से केवल डरते हैं, क्योंकि उन्हें फिर से चोट पहुँचाए जाने का भय होता है। कभी-कभी वे लोगों के प्रति क्षमा न करना, घृणा और क्रोध भी रखते हैं, विशेषकर उन लोगों के प्रति जो किसी भी प्रकार से उन लोगों के समान दिखाई देते हैं जिन्होंने उन्हें चोट पहुँचाई थी। इसलिए, जब वे परमेश्वर के साथ संबंध रखते हैं, तो उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना बहुत कठिन होता है जो लोगों से सच्चा प्रेम करते हैं, बिना किसी दुर्भावना के, और जो कभी कोई हानिकारक या दुखदायी कार्य नहीं करेंगे। उनके लिए हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम पर विश्वास करना कठिन होता है।

परन्तु परमेश्वर अपने लोगों की लगातार असफलताओं के बावजूद उनके प्रति अपने अटल प्रेम की घोषणा करते हैं।

यिर्मयाह 31:3
यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है: मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

परमेश्वर चाहते हैं कि हम जानें कि उनका प्रेम सब से बढ़कर है, और कोई भी वस्तु हमें उनके प्रेम से अलग नहीं कर सकती।

7) स्वयं की आलोचना करने वाले

स्वयं की आलोचना करने वाले वे लोग होते हैं जो अपने प्रति और दूसरों के प्रति अत्यधिक आलोचनात्मक होते हैं। *"मैं अच्छा नहीं हूँ, अपने लिए, दूसरों के लिए, परमेश्वर के लिए कभी पर्याप्त अच्छा नहीं हूँ..."* यही उनकी सोच होती है। इसलिए, वे स्वीकृति, पहचान आदि पाने के लिए स्वयं को कार्य करने और प्रतिस्पर्धा करने के लिए धकेलते हैं। कभी-कभी यह भय से प्रेरित होता है, और लोग आगे बढ़ने के लिए दूसरों को नियंत्रित और प्रभावित भी करने लगते हैं। परिणामस्वरूप, उनके भीतर अपने प्रति और दूसरों के प्रति कटु न्याय की जड़ें (आलोचनात्मक भावना) उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए, जब वे परमेश्वर से संबंध रखते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना बहुत कठिन होता है जो अपने महान प्रेम के कारण अनुग्रह से परिपूर्ण हैं। उनके लिए यह समझना कठिन होता है कि परमेश्वर हमसे वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हम हैं और अपने प्रेम के कारण हमें वह देते हैं जिसके हम योग्य नहीं हैं। यह बात उनकी समझ में नहीं आती!

फिर भी, पवित्रशास्त्र हमें ऐसे परमेश्वर की ओर संकेत करता है जो दया से धनी और हमारे प्रति अपने महान, असीमित और निःशर्त प्रेम के कारण अनुग्रह से भरपूर हैं।

इफिसियों 2:4,5
[4]परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हमसे प्रेम किया,
[5]जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)

क्या बात हमें परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण करने से रोक रही है

आइए जाँच करें कि क्या हम इनमें से किसी या अन्य गलत दृष्टिकोणों (परमेश्वर के विषय में भ्रांतियों) को पकड़े हुए हैं, जो वास्तव में हमें उन्हें एक प्रेमी स्वर्गीय पिता के रूप में पहचानने और हमारे प्रति उनके निःशर्त तथा असीमित प्रेम को ग्रहण करने से रोकते हैं।

1) **उड़ाऊ पुत्र:** उड़ाऊ पुत्र से वह कहते हैं, *"जब तुम पापी ही थे, तब भी मैंने तुमसे प्रेम किया।"*

2) **दास:** दास से वह कहते हैं, *"जगत की उत्पत्ति से पहले ही, मैंने तुम्हें अपना पुत्र या पुत्री बनाने की योजना बनाई थी।"*

3) **अनाथ**: अनाथ से वह कहते हैं, *"तुम्हारी रचना करने से पहले ही, तुम्हारे जन्म लेने से पहले ही, मैंने तुम्हें अपने परिवार में अपनाने की योजना बनाई थी।"*

4) **बहिष्कृत:** बहिष्कृत से वह कहते हैं, *"मैं तुमसे इतना प्रेम करता हूँ और तुम्हें अपने इतना निकट चाहता हूँ कि मैंने तुम्हें अपने ठीक बाजू में बैठाया है।"*

5) **घमण्डी बड़ा भाई:** घमण्डी बड़े भाई, अर्थात् आत्मधर्मी व्यक्ति से वह कहते हैं, *"केवल मेरे प्रेम को ग्रहण कर लो; वह सदैव तुम्हारे लिए उपस्थित है।"*

6) **घायल व्यक्ति:** घायल व्यक्ति से वह कहते हैं, *"दूसरों ने तुम्हें चोट पहुँचाई है, परन्तु मैं इतना भला हूँ कि तुम्हारे साथ बुरा नहीं करूँगा, और इतना कोमल हूँ कि तुम्हें हानि नहीं पहुँचाऊँगा।"*

7) **स्वयं की आलोचना करने वाला:** स्वयं की आलोचना करने वाले से वह कहते हैं, *"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ क्योंकि मैं प्रेम हूँ। स्वयं को दोषी न ठहराओ क्योंकि मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहराता।"*

आइए हम उनसे प्रार्थना करें कि वह हमें चंगा करें और उनके असीम तथा निःशर्त प्रेम को ग्रहण करने और उनके द्वारा प्रेम किए जाने की हमारी क्षमता को पुनर्स्थापित करें।

परमेश्वर ने हमें अपने असीम और निःशर्त प्रेम का केन्द्र बनाया है। उनके प्रेम ने हमें उनके पुत्र और पुत्रियाँ बना दिया है। परमेश्वर हमारे पिता हैं। हम उनके हैं।

1 यूहन्ना 3:1a
देखो, पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम हैं भी।

1 यूहन्ना 3:1a (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल)
देखो, पिता ने हमसे कैसा अद्‌त प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ!

चिंतन

1) इस सत्य पर मनन करिए कि परमेश्वर एक संबंध रखने वाले परमेश्वर हैं—सृष्टि से पहले भी प्रेम था, और सृष्टि प्रेम के कारण हुई।

2) उन सात गलत दृष्टिकोणों (भ्रांतियों) की पुनः समीक्षा करिए जो हमारे भीतर हो सकती हैं, और यह कि वे किस प्रकार परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को प्रभावित करती हैं।

3) क्या उन सात गलत दृष्टिकोणों में से कोई आपके जीवन से मेल खाता है (जिससे आप स्वयं को जोड़ते हैं)? कुछ समय प्रार्थना में बिताइए और परमेश्वर को आमंत्रित करिए कि वह इन गलत धारणाओं को दूर करें और उनकी जगह अपने वचन के सत्य

को स्थापित करें, ताकि आप स्वतंत्रता के साथ परमेश्वर को अपने स्वर्गीय पिता के रूप में जान सकें।

4) अपने विचारों / भावनाओं को लिखिए जब आप स्वयं को परमेश्वर के पुत्र या पुत्री के रूप में देखते हैं; ऐसे व्यक्ति के रूप में जो उनके असीम और निःशर्त प्रेम का केन्द्र है।

5) सुसमाचारों में उन दृष्टान्तों को पढ़िए जहाँ प्रभु यीशु ने "स्वर्गीय पिता" (मत्ती 6:14,26,32; मत्ती 15:13; मत्ती 18:35; लूका 11:13) और "स्वर्ग में पिता" (मत्ती 5:16,45,48; मत्ती 6:1,9; मत्ती 7:21; मत्ती 12:50; मत्ती 18:19; मरकुस 11:25,26) शब्दों का उपयोग किया है। उन प्रसंगों पर मनन करिए और विचार करिए कि जीवन की इन दैनिक परिस्थितियों में आप परमेश्वर के साथ अपने स्वर्गीय पिता के रूप में कैसे संबंध रख सकते हैं।

2
असीमित प्रेम

उनके प्रेम की असीम महानता

इफिसियों 3:17-19
[17]और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर,
[18]सब पवित्र लोगों के साथ भली–भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है,
[19]और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो

इफिसियों 3:17-19 (एम्प्लीफाइड बाइबल अंग्रेजी बाइबल)
[17]ताकि मसीह विश्वास के द्वारा आपके हृदयों में वास करें। और आप प्रेम में गहरे जड़ पकड़कर और दृढ़ नींव पर स्थिर होकर,
[18]सब पवित्र लोगों के साथ भली भाँति समझने में समर्थ हों कि उसका प्रेम कितना चौड़ा और लंबा और ऊँचा और गहरा है [और उस अद्‌भुत, अनंत प्रेम का पूरा अनुभव करें];
[19]और [कि आप] मसीह के उस प्रेम को जान सकें [व्यवहारिक रूप से, अपने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा], जो ज्ञान से कहीं बढ़कर है [ऐसे ज्ञान से जो केवल बौद्धिक हो और अनुभवहीन हो], ताकि आप परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाएँ [अर्थात् आपके संपूर्ण अस्तित्व में परमेश्वर की उपस्थिति का सबसे समृद्ध अनुभव हो, और आप पूरी तरह परमेश्वर से भर जाएँ]।

जैसा कि प्रेरित पौलुस ने इन वचनों में व्यक्त किया है, परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता चाहते हैं कि हम ऐसी स्थिति तक पहुँचें जहाँ हम उनके हमारे प्रति असीमित प्रेम में गहराई से जड़ पकड़ लें (एक वृक्ष के समान) और दृढ़ता से स्थिर हो जाएँ (एक मजबूत नींव वाली इमारत के समान)।

वचन 18 और 19 में, प्रेरित पौलुस पिता के प्रेम को "समझने" और "जानने" की बात कर रहे हैं, जो व्यक्तिगत और व्यक्तिगत अनुभवात्मक है, केवल बौद्धिक नहीं। यूनानी भाषा में "समझना" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "उत्सुकता से ग्रहण करना, पकड़ लेना, अपने अधिकार में लेना, अनुभव के द्वारा जानना।" परमेश्वर, हमारे स्वर्गीय पिता चाहते हैं कि हम व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा उनके हमारे प्रति बिना शर्त प्रेम की असीमित महानता को व्यवहारिक रूप से जानें।

पिता का प्रेम चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई में असीमित है (इफिसियों 3:18)।

- **उनका प्रेम संसार जितना व्यापक है।**
  "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा..." (यूहन्ना 3:16)।
- **उनके प्रेम की लंबाई उतनी दूर तक पहुँचती है, जितना दूर हम में से कोई भटक गया हो।**
  "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह 53:6)
- **उनके प्रेम की गहराई उतनी गहरी है जितनी गहरी उस अधम अवस्था तक हम स्वयं को ले गए हों।**
  "...इस कारण वह उनका भी पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं..." (इब्रानियों 7:25)।
- **उनका प्रेम आकाश से भी ऊँचा है।**
  उन्होंने *"हमें उसके साथ जिलाया, और मसीह यीशु में उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाया"* (इफिसियों 2:6)।
- **उनका प्रेम कालातीत, स्थायी और कभी न थकने वाला है।**
  "मैं ने तुझ से सदा प्रेम रखा है..." (यिर्मयाह 31:3)।

यीशु मसीह का क्रूस—परमेश्वर के असीमित प्रेम की सर्वोच्च अभिव्यक्ति

यूहन्ना 3:16,17

16"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

17परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

रोमियों 5:8

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

1 यूहन्ना 4:9,10

9जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।

10प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।

बाइबल हमें यीशु मसीह के क्रूस की ओर संकेत करती है, जो हमारे प्रति पिता के महान प्रेम की अभिव्यक्ति और प्रमाण है। कई बार हम अस्थायी बातों को इस बात का संकेत या प्रमाण मान लेते हैं कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करते हैं। यदि हम अपनी पढ़ाई या व्यावसायिक जीवन में अच्छा करते हैं, तो हम इसे इस बात का चिन्ह मानते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं। यदि हम अच्छा नहीं करते, तो हम यह समझ लेते हैं कि शायद परमेश्वर किसी प्रकार से हमसे क्रोधित या अप्रसन्न हैं। परंतु बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम इस प्रकार प्रगट किया कि उन्होंने यीशु मसीह को हमारे लिये मरने के लिये भेजा। इसलिए, जब भी हम पिता के प्रेम का कोई चिन्ह या प्रमाण चाहते हैं, तो हमें यीशु मसीह और उस कार्य की ओर देखना चाहिए जो उन्होंने हमारे लिये क्रूस पर किया।

हम पापी थे। हमारे पापों ने हमें परमेश्वर से अलग कर दिया था। हमारे पाप हमें नरक की ओर ले जा रहे थे—एक ऐसी अनन्त अवस्था जहाँ परमेश्वर से अलगाव हो। हम शैतान के अधीन थे। प्रभु यीशु क्रूस पर मरे, उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति के पापों का पूरा दण्ड चुका दिया और पाप, शैतान, नरक और कब्र पर विजय प्राप्त की। वह विजयी होकर जी उठे और पिता के पास स्वर्ग में लौट गए। उन्होंने वह सब कुछ पूरा कर दिया जो प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक था, ताकि वह क्षमा पाए, पाप और शैतान से स्वतंत्र हो, और परमेश्वर के परिवार में लाया जाए। यह कार्य पूरा हो चुका है! यह प्रेम का कार्य था जिसे स्वयं परमेश्वर ने हमारे लिये किया। यीशु मसीह का क्रूस पिता के हमारे प्रति प्रेम की अनन्त चौड़ाई, लंबाई, गहराई और ऊँचाई—उसकी असीमित महानता—की ओर संकेत करता है। अब केवल एक ही बात शेष है कि प्रत्येक व्यक्ति विश्वास के द्वारा व्यक्तिगत रूप से उसे ग्रहण करे जो मसीह ने किया है, और उनके पूर्ण किए हुए कार्य में जीवन बिताए।

- परमेश्वर का प्रेम इतना व्यापक है कि उसमें प्रत्येक व्यक्ति सम्मिलित है।
- परमेश्वर का प्रेम इतना लंबा है कि वह सबसे दूर भटके हुए पापी तक पहुँचता है।
- परमेश्वर का प्रेम इतना गहरा है कि वह सबसे अधम स्थान तक पहुँचता है।
- परमेश्वर का प्रेम इतना ऊँचा है कि वह हमें स्वयं परमेश्वर तक, उनके दाहिने हाथ तक उठा ले जाता है।

क्रूस हमारे भीतर सिद्ध प्रेम करने की क्षमता को पुनःस्थापित करता है

प्रभु यीशु केवल परमेश्वर के असीमित प्रेम को हमारे प्रति प्रगट करने के लिये ही क्रूस पर नहीं मरे, बल्कि वे हमें संपूर्ण बनाने के लिये भी मरे।

यशायाह 53:5
परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।

उन्होंने हमारे सब पापों का दण्ड चुका दिया। उन्होंने दुःख और दण्ड को सहा ताकि हमें शान्ति मिले। इब्रानी भाषा में शान्ति के लिये शब्द *'शलोम'* है, जिसका अर्थ है संपूर्णता और पूर्ण कुशल-मंगल। जिन घावों को उन्होंने सहा, उनके द्वारा हम सब प्रकार की बीमारी से चंगे हुए हैं (मत्ती 8:16,17)।

उन्होंने क्रूस के द्वारा हमें सिद्ध प्रेम प्रदान किया। उन्होंने हमें संपूर्ण भी बनाया ताकि हम परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को ग्रहण कर सकें और परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को दूसरों तक पहुँचा सकें।

जब हम परमेश्वर के उस असीमित प्रेम को ग्रहण करते हैं जो उनके पुत्र के द्वारा प्रगट हुआ, तब हम संपूर्ण बनाए जाते हैं। तब हम उस महान प्रेम को समझते हैं जो परमेश्वर हमसे और हमारे आसपास के लोगों से रखते हैं। वह प्रेम को ग्रहण करने और प्रेम देने की हमारी क्षमता को पुनःस्थापित करते हैं।

उनके महान प्रेम के कारण, प्रचुर दया और अनुग्रह है

इफिसियों 2:1-7
[1]उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे
[2]जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।
[3]इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।
[4]परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हमसे प्रेम किया,

[5]जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),
[6]और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया
[7]कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।

अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उन्होंने हमसे प्रेम किया, वह दया और अनुग्रह से भरपूर हैं। उन्होंने हमें उठाकर अपने साथ बैठाया है।

हमने परमेश्वर के प्रेम में स्थान पाने के लिये कुछ कमाया नहीं। हम उनके प्रेम, उनकी दया और उनके अनुग्रह के कारण इसमें लाए गए हैं।

परमेश्वर का प्रेम उनकी दया और अनुग्रह के द्वारा प्रगट होता है। अपने असीमित प्रेम के कारण, परमेश्वर हम पर दया और अनुग्रह करते हैं।

परमेश्वर की दया, उनकी करुणा, कृपा और भलाई है, जो वे हम पर इस प्रकार प्रगट करते हैं कि हमारे भूतकाल, हमारी गलतियों और हमारी उलझनों को अनदेखा कर देते हैं। दया उस दण्ड को रोक लेती है जिसके हम योग्य थे। परमेश्वर दया से भरपूर हैं। उनकी दया आपके सबसे बड़े अपराध से भी अधिक महान है! पाप बहुत महँगा है, परन्तु परमेश्वर की दया उससे भी अधिक महान है!

परमेश्वर का अनुग्रह वह है जो परमेश्वर देते हैं या करते हैं। यह परमेश्वर की समृद्धि है जो हमें दी जाती है। अनुग्रह हमें वह प्रदान करता है जिसके हम योग्य नहीं हैं और जिसे हम स्वयं कभी कमा या प्राप्त नहीं कर सकते।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी—दया और अनुग्रह का प्रदान किया जाना

लूका 15:11-32

[11]फिर उसने कहा, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
[12]उनमें से छोटे ने पिता से कहा, 'हे पिता, सम्पत्ति में से जो भाग मेरा हो वह मुझे दे दीजिए।' उसने उनको अपनी सम्पत्ति बाँट दी।
[13]बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया, और वहाँ कुकर्म में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी।
[14]जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।
[15]इसलिये वह उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ जा पड़ा। उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा।
[16]और वह चाहता था कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे, अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था।
[17]जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा, 'मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ।
[18]मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।
[19]अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।'
[20]"तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला: वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।
[21]पुत्र ने उससे कहा, 'पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ।'
[22]परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अँगूठी, और पाँवों में जूतियाँ पहिनाओ,
[23]और पला हुआ पशु लाकर मारो ताकि हम खाएँ और आनन्द मनाएँ।
[24]क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है: खो गया था, अब मिल गया है।' और वे आनन्द करने लगे।
[25]"परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था। जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तो उसने गाने–बजाने और नाचने का शब्द सुना।
[26]अत: उसने एक दास को बुलाकर पूछा, 'यह क्या हो रहा है?'
[27]उसने उससे कहा, 'तेरा भाई आया है, और तेरे पिता ने पला हुआ पशु

कटवाया है, इसलिये कि उसे भला चँगा पाया है।'
[28]यह सुनकर वह क्रोध से भर गया और भीतर जाना न चाहा, परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा।
[29]उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूँ और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।
[30]परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने पला हुआ पशु कटवाया।'
[31]उसने उससे कहा, 'पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।
[32]परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है'।"

पिता ने अपने पुत्र के प्रति अपना प्रेम, **दया** और **अनुग्रह** प्रदान करके प्रगट किया।

दया—पिता ने उन सब गलतियों को क्षमा कर दिया जो पुत्र ने की थीं—सम्पत्ति को उड़ा देना, परिवार का अपमान और बदनामी करना, स्वयं को पतित कर लेना, आदि।

अनुग्रह—पिता ने पुत्र को वह दिया जिसका वह वास्तव में योग्य नहीं था—एक वस्त्र, एक अंगूठी, जूते, एक भव्य भोज और घर में वारिस होने का अधिकार!

यदि हम केवल उनकी ओर फिरें, तो हम उनके असीमित प्रेम का प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे! हम उनकी प्रचुर दया और अनन्त अनुग्रह को प्राप्त करेंगे।

यह हमें उनके असीमित प्रेम के विषय में क्या प्रकट करता है ...

- जब हम विद्रोह में होते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करते हैं।

- जब हम मलिनता से ढके हुए और पाप में डूबे होते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करते हैं।
- जब हम टूटे हुए, नष्ट और बरबाद हो चुके होते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करते हैं।
- जब हम अपनी सबसे बुरी अवस्था में होते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करते हैं।

यह प्रेम समुद्र के समान विशाल है! उनका प्रेम हमारी गहरी दुष्टता, हमारे सबसे बड़े भटकाव, हमारे अविश्वासी संदेहों और हमारे पूर्ण मार्गभ्रष्ट होने से भी बढ़कर है।

पिता हमसे असीमित और कभी न थकने वाले प्रेम से प्रेम करते हैं। पिता का प्रेम माप से परे है, जो हमें उनके पुत्र यीशु मसीह में प्रगट हुआ है। अपने असीमित प्रेम में से वह हम पर अपनी दया और अनुग्रह उंडेलते हैं।

रोमियों 8:32
जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?

परमेश्वर की दया और अनुग्रह को प्राप्त करने तथा परमेश्वर की सन्तान बनने की प्रार्थना

परमेश्वर हमें यह अद्‌त अवसर प्रदान करते हैं कि हम अपने सब पापों की क्षमा प्राप्त करें और यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा उनकी सन्तान बन जाएँ। यह एक निर्णय है जो हम में से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से लेना होता है। कोई दूसरा हमारे लिये यह नहीं कर सकता। हमें स्वयं यह चुनाव करना होता है कि हम यीशु मसीह पर विश्वास करें और अपने जीवन भर केवल उन्हीं का अनुसरण करें। बाइबल कहती है, *"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान*

होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं" (यूहन्ना 1:12)।

यदि आपने कभी यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण करने का निर्णय नहीं लिया है, और अपने पापों की क्षमा तथा परमेश्वर की सन्तान बनने के लिये उन पर विश्वास नहीं किया है, तो आप अभी ऐसा कर सकते हैं।

आप यह निर्णय लेने के लिये इस नमूना प्रार्थना का उपयोग कर सकते हैं। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु,

मेरे पापों के लिये क्रूस पर मरने और मेरे प्रति पिता के महान प्रेम को प्रगट करने के लिये आपका धन्यवाद। मैं विश्वास करता हूँ कि जब आप मेरे लिये क्रूस पर मरे, तब आपने मेरे सब पापों का मूल्य चुका दिया। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने शैतान को पराजित किया, नरक और मृत्यु पर विजय प्राप्त की और तीसरे दिन जी उठे। मैं विश्वास करता हूँ कि आप आज जीवित हैं और मुझे परमेश्वर के परिवार में लाने के लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज मैं आपको अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण करता हूँ। मैं आप पर विश्वास करता हूँ। मुझे परमेश्वर की सन्तान बनाइए और जीवन भर आपका अनुसरण करने में मेरी सहायता करिए। यीशु के नाम में।

आमीन।

यहाँ प्रेम है

(विलियम रीस, 1900)

यहाँ प्रेम है, समुद्र के समान विशाल,
प्रेममयी करुणा बाढ़ के समान;
जब जीवन के राजकुमार, हमारे छुड़ानेवाले ने,
हमारे लिये अपना बहुमूल्य लहू बहाया।
कौन उनके प्रेम को स्मरण न रखेगा?
कौन उनकी स्तुति गाना छोड़ सकता है?
वह कभी भुलाए नहीं जा सकते,
स्वर्ग के अनन्त दिनों तक।

क्रूस पर चढ़ाए जाने के पर्वत पर,
गहरे और विस्तृत सोते खुल गए;
परमेश्वर की दया के द्वारों में से
अनुग्रह की महान धारा बह निकली।
अनुग्रह और प्रेम, प्रबल नदियों के समान,
लगातार ऊपर से झरने गए,
और स्वर्ग की शान्ति और सिद्ध न्याय ने
दोषी संसार को प्रेम में आलिंगन किया।

मुझे ऐसा होने दीजिए कि मैं आपके सारे प्रेम को ग्रहण करके,
अपने सारे जीवन भर आप से प्रेम करूँ;
मुझे केवल आपके राज्य को खोजने दीजिए,
और मेरा जीवन आपकी स्तुति के लिये हो;
केवल आप ही मेरी महिमा होंगे,
इस संसार में मैं और कुछ नहीं देखता;
आपने मुझे शुद्ध और पवित्र किया है,
आपने स्वयं मुझे स्वतंत्र किया है।

अपने सत्य में आप अपने वचन और आत्मा के द्वारा
मेरा मार्गदर्शन करते हैं;
और जब मैं आप पर भरोसा रखता हूँ, हे मेरे प्रभु,
तब आपका अनुग्रह मेरी हर आवश्यकता को पूरा करता है।
अपनी परिपूर्णता में से आप
अपना महान प्रेम और सामर्थ्य मुझ पर उंडेल रहे हैं,
बिना माप के, पूर्ण और असीम,
मेरे हृदय को अपनी ओर आकर्षित करते हुए।

चिंतन

1) हमारे लिये, विश्वासियों के रूप में, पिता के हमारे प्रति असीमित प्रेम में "गहराई से जड़ पकड़ना" और "दृढ़ता से स्थिर होना" क्यों महत्वपूर्ण है?

2) परमेश्वर की दया और अनुग्रह उनके हमारे प्रति असीमित प्रेम से प्रवाहित होते हैं। "दया" और "अनुग्रह" से आप क्या समझते हैं?

3) अपने आप को परमेश्वर के प्रेम के समुद्र में डूबा हुआ चित्रित करिए। अपने विचार लिखिए। इस प्रकार असीमित रीति से बिना शर्त प्रेम किया जाना आपके लिये क्या अर्थ रखता है?

3
हमारे स्वर्गीय पिता का सच्चा चित्र

हमें परमेश्वर का सही चित्र, परमेश्वर के वचन में प्रस्तुत किया गया सच्चा चित्र, रखना आवश्यक है।

एक गलत चित्र हमें परमेश्वर के सामने गलत भावना या रवैया अपनाने के लिये प्रेरित कर सकता है, अर्थात् हम परमेश्वर के साथ गलत प्रकार से सम्बन्ध रखते हैं। उदाहरण के लिये, यदि हम सोचते हैं कि परमेश्वर कंजूस हैं, आशीष देने, प्रबन्ध करने और अपने लोगों को समृद्ध करने में अनिच्छुक हैं, तो हम अपने जीवन में परमेश्वर की आशीष या प्रबन्ध के लिये विश्वास के साथ प्रार्थना नहीं कर पाते। हमारी प्रार्थनाएँ "यदि" और "शायद" से भरी रहती हैं।

हमारे स्वर्गीय पिता का गलत चित्र हमें परमेश्वर की इच्छा के विषय में अनिश्चित छोड़ सकता है।

हमारे स्वर्गीय पिता का गलत चित्र हमें जीवन की चुनौतियों के समय निर्बल और भयभीत कर सकता है। हम निश्चित नहीं होते कि परमेश्वर हमसे प्रसन्न हैं या हमसे क्रोधित।

हम में से कुछ ऐसे घरों में बड़े हुए हैं जहाँ हमने वास्तव में माता-पिता के प्रेम या पिता के प्रेम का अनुभव नहीं किया। हो सकता है कि हमारे माता-पिता अच्छे रहे हों, फिर भी हमने उनके प्रेम का अनुभव न किया हो।

इसलिए, इस अध्याय में हम परमेश्वर को हमारे स्वर्गीय पिता के रूप में प्रस्तुत करते हैं, उन विशेषताओं के विपरीत जिन्हें हम अपने

व्यक्तिगत अनुभवों या पूर्वधारणाओं के आधार पर उनके साथ जोड़ देते हैं। इस अध्याय में हमारा उद्देश्य हमारे स्वर्गीय पिता के विषय में एक बाइबिल आधारित दृष्टिकोण प्राप्त करना है। ये पूर्ण विवरण नहीं हैं, परन्तु ये महत्वपूर्ण और अत्यन्त आवश्यक वर्णन हैं, जो हमारे स्वर्गीय पिता का एक बाइबिल चित्र प्रस्तुत करने में सहायता करते हैं।

एक अटल स्वर्गीय पिता

परमेश्वर एक अटल स्वर्गीय पिता हैं जिन पर भरोसा किया जा सकता है, जिन पर निर्भर रहा जा सकता है। यह उन अप्रत्याशित माता-पिताओं के विपरीत है जिनके व्यवहार या प्रतिक्रिया के विषय में हमें निश्चितता नहीं होती।

याकूब 1:17
क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है,और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है,और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।

हमारे स्वर्गीय पिता अपने स्वरूप, अपने वचन और अपने कार्यों में "स्थिर" हैं। हम उन पर भरोसा कर सकते हैं और पूरी तरह उन पर निर्भर रह सकते हैं।

एक कभी न छोड़ने वाले स्वर्गीय पिता

परमेश्वर ऐसे स्वर्गीय पिता हैं जो हमें कभी निराश नहीं करते। यह उन माता-पिताओं के विपरीत है जो हमें निराश कर देते हैं या अनुपस्थित रहते हैं। ऐसे माता-पिता जो "वहाँ" तो होते हैं, परन्तु जब हमें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है तब "वास्तव में वहाँ" नहीं होते।

इब्रानियों 13:5
तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे

त्यागूँगा।"

परमेश्वर ऐसे स्वर्गीय पिता हैं जो सदैव हमारे लिये उपस्थित रहते हैं। परमेश्वर इतने भले हैं कि हमारे साथ बुरा नहीं कर सकते, इतने बुद्धिमान हैं कि कोई गलती नहीं कर सकते, और इतने सामर्थी हैं कि हमें निराश नहीं होने देंगे।

एक उदार और दानी पिता

परमेश्वर ऐसे स्वर्गीय पिता हैं जो उदार और दानी हैं। यह उन कंजूस और कृपण माता-पिताओं के विपरीत है जिनसे हम कुछ माँगने में भी डरते हैं। परमेश्वर ऐसे स्वर्गीय पिता हैं जो हमारी हर आवश्यकता को पूरा करते हैं।

मत्ती 6:31,32

31"इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएँगे, या क्या पीएँगे, या क्या पहिनेंगे।
32क्योंकि अन्यजातीय इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है।

मत्ती 7:7-11

7माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
8क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।
9"तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो वह उसे पत्थर दे?
10या मछली माँगे, तो उसे साँप दे?
11अत: जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?

परमेश्वर सांसारिक माता-पिता से अनन्त गुणा बेहतर हैं। वह हमारी आवश्यकताओं को जानते हैं और अपने बच्चों को अच्छी

वस्तुएँ देते हैं।

याकूब 1:5
पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।

परमेश्वर सब को देते हैं, उदारता से देते हैं और बिना दोष लगाए, बिना कुड़कुड़ाए या शिकायत किए देते हैं।

भजन संहिता 84:11
क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं, उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा।

परमेश्वर को हमारे उदार और दानी स्वर्गीय पिता के रूप में जानना हमें अनुग्रह के सिंहासन के पास निडर होकर आने के लिये स्वतंत्र करता है, ताकि आवश्यकता के समय सहायता और प्रबन्ध माँग सकें, यह जानते हुए कि वह हमारी माँग को पूरा करेंगे।

एक दयालु पिता

परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं जो *"क्रोध करने में धीमे और करुणा से परिपूर्ण"* हैं (भजन संहिता 103:8)। यह उन माता-पिताओं के विपरीत है जो चिड़चिड़े या शीघ्र क्रोधित होने वाले होते हैं और बहुत आसानी से क्रोधित हो जाते हैं।

हम सब गलतियाँ करते हैं, परन्तु परमेश्वर एक दयालु स्वर्गीय पिता हैं जो क्षमा करते हैं।

भजन संहिता 103:8
यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है।

विलापगीत 3:22,23
[22]हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है।
[23]प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान् है।

परमेश्वर ऐसे दयालु स्वर्गीय पिता हैं जो हमें बार-बार एक और अवसर देते हैं!

परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता, अपनी दया में, प्रेमपूर्वक हमें सुधारते और अनुशासन में भी रखते हैं। हमारे साथ उनके सभी अनुशासनात्मक व्यवहारों में भी, वह करुणामय रहते हैं और हमारे कल्याण को चाहते हैं।

हम इस विषय पर आने वाले अध्याय में चर्चा करेंगे।

एक छुड़ाने वाले पिता

परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं जो छुड़ाने वाले पिता हैं और अपने हर कार्य में छुटकारे का कार्य करते हैं। जब सब कुछ खोया हुआ प्रतीत होता है, तब भी वह छुड़ाने के उपाय खोजते हैं—पुनः प्राप्त करने, पुनर्स्थापित करने, फिर से निर्माण करने और हमें अधिक महिमा तक उठाने के लिये। यह उन माता-पिताओं के विपरीत है जो अंतिम चेतावनी देकर हमारे साथ अपने सम्बन्ध को समाप्त कर देते हैं।

यशायाह 63:16
निश्चय तू हमारा पिता है, यद्यपि अब्राहम हमें नहीं पहिचानता, और इस्राएल हमें ग्रहण नहीं करता; तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ानेवाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है।

इस विषय के अधिक विस्तृत अध्ययन के लिये, कृपया APC की पुस्तक **"परमेश्वर का छुटकारे देने वाला हृदय" (The Redemptive Heart of God)** पढ़िए, जो **apcwo.org/books** पर निःशुल्क

डाउनलोड के रूप में उपलब्ध है।

एक स्वीकार करने वाले पिता

परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं जो हमें स्वीकार करते हैं। वह हमें स्वीकार करते हैं, हम में आनन्दित होते हैं और प्रेम की दृष्टि से हमें देखते हैं। यह ऐसे माता-पिता के विपरीत है जो हमेशा हमें नीची दृष्टि से देखते हैं, हमारे विषय में कम सोचते हैं, हमें अयोग्य और अनुपयुक्त समझते हैं, और हमेशा हम पर सन्देह करते हुए हमें स्वीकार नहीं करते।

इफिसियों 1:4-6
[4]जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।
[5]और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों,
[6]कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंतमेंत दिया।

क्योंकि हम जानते हैं कि उनकी दृष्टि में हम इतने अधिक प्रेम किए गए और स्वीकार किए गए हैं, इसलिए हम आदर के साथ, फिर भी आनन्द और स्वतंत्रता से उनकी उपस्थिति में प्रवेश करते हैं, यह जानते हुए कि वहाँ हमारा सदैव स्वागत है। वह ऐसे स्वर्गीय पिता हैं जो हम में आनन्दित होते हैं और चाहते हैं कि हम भी उनमें आनन्दित हों।

हम जैसे हैं—और मसीह में उन्होंने हमें जो बनाया है—वैसे ही स्वीकार किए गए हैं। स्वीकार या सराहे जाने के लिये हमें "कुछ प्राप्त" करने की आवश्यकता नहीं है। हम स्वीकार किए गए हैं। अस्वीकृति की हर भावना समाप्त हो जाती है!

अत्यधिक अनुग्रह से परिपूर्ण पिता

परमेश्वर ऐसे स्वर्गीय पिता हैं जो अनुग्रह से परिपूर्ण हैं और हम पर वह भी उंडेलते हैं जिसके हम योग्य नहीं हैं, केवल इसलिए कि वह हमारे प्रति कृपालु और दयालु हैं। यह ऐसे कठोर माता-पिता के विपरीत है जिनके लिये हर वस्तु को कमाना आवश्यक होता है, और हमें केवल वही मिलता है जिसके हम योग्य समझे जाते हैं।

उच्च अपेक्षाएँ रखने वाले कठोर माता-पिता हमें यह महसूस करा सकते हैं कि हम कभी पर्याप्त अच्छे नहीं हैं, और हमें असफलता का अनुभव करा सकते हैं। हमें स्वीकृति तभी मिलती है जब हम उनकी अपेक्षाओं से बढ़कर कार्य करें।

यदि हमें परमेश्वर के इस अनुग्रह की समझ नहीं है, तो हम परमेश्वर के साथ अपने कार्यों के आधार पर सम्बन्ध रखते हैं—जैसे कि परमेश्वर के लिये, सेवकाई में, चर्च में, आदि जो कुछ हम करते हैं। जितना अधिक हम "करते" हैं, उतना ही अधिक हमें लगता है कि परमेश्वर हमें स्वीकार करते हैं। हम अपने हर कार्य के लिये पहचान और प्रशंसा चाहते हैं और अपनी पहचान को इन्हीं बातों पर आधारित करते हैं, क्योंकि हम अनुग्रह को नहीं समझते।

जब हम परमेश्वर को अत्यधिक अनुग्रह से परिपूर्ण पिता के रूप में समझते हैं, तब हम दूसरों के प्रति भी अनुग्रहकारी होते हैं, क्योंकि हम उस अनुग्रह को महत्व देते हैं जो परमेश्वर ने हम पर किया है।

इफिसियों 2:7
कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।

रोमियों 5:17
क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा

राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

सामर्थ देने वाले पिता

परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं जो हमें सामर्थ देते हैं। वह हम में सर्वोत्तम को देखते हैं और हमें वैसा बनने योग्य बनाते हैं जैसा बनने के लिये उन्होंने हमें रचा है। वह अपने संसाधनों और अपने राज्य के कार्यों की जिम्मेदारियों को हमें सौंपते हैं। यह ऐसे माता-पिता के विपरीत है जो हम पर विश्वास नहीं करते, सोचते हैं कि हम अयोग्य और अविश्वसनीय हैं, और हमारे जीवन में कुछ अच्छा नहीं होगा।

हमारे स्वर्गीय पिता हमारे विषय में अच्छे विचार रखते हैं और हमारे लिये अच्छी योजनाएँ रखते हैं (यिर्मयाह 29:11)।

लूका 12:32
"हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

कुलुस्सियों 1:12
और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों।

अनन्त पिता

परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं जो असीम हैं और हमारे भीतर, हमारे द्वारा और हमारे लिये असीम कार्य करते हैं। यह सांसारिक माता-पिता के विपरीत है, जो अपनी सामर्थ, प्रबन्ध और हमारे लिये जो कुछ हो सकते हैं उसमें सीमित हैं।

- वह कभी वृद्ध नहीं होते। (भजन संहिता 102:26)
- वह कभी थकते या क्लान्त नहीं होते। (यशायाह 40:28)

- उनकी बुद्धि कभी समाप्त नहीं होती। (यशायाह 40:28)

इफिसियों 3:20
अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है,

वह "पिता" और "माता" दोनों के समान हैं। इसलिए यदि आप चाहें, तो कह सकते हैं कि पिता परमेश्वर का एक "मातृ-हृदय" भी है—एक ऐसा हृदय जो देखभाल करने वाला, पोषण देने वाला और स्नेहपूर्ण है।

यशायाह 49:14-16
14परन्तु सिय्योन ने कहा, "यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया है।"
15"क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हाँ, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता।
16देख, मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।

आत्म-भ्रम और शैतान के झूठ को अस्वीकार करना

परमेश्वर के विषय में जो गलत चित्र हमने बना लिया है, वह वास्तव में आत्म-भ्रम है। हम स्वयं को इस बात के विषय में धोखा देते हैं कि परमेश्वर कौन हैं। शैतान भी हमसे झूठ बोलता है और चाहता है कि हमारे मन में परमेश्वर का गलत चित्र हो।

उन विरोधी धारणाओं पर विचार करिए जो हम में से कुछ लोग परमेश्वर के विषय में रखते हैं।

1) एक अप्रत्याशित परमेश्वर, एक अटल स्वर्गीय पिता के स्थान पर।

2) एक अविश्वसनीय परमेश्वर, एक कभी न छोड़ने वाले स्वर्गीय पिता

के स्थान पर।

3) एक कंजूस परमेश्वर, जिसे हमें कुछ देने के लिये किसी प्रकार मनाना पड़ता है, एक उदार और दानी पिता के स्थान पर।

4) एक ऐसा परमेश्वर जो आग और गन्धक के साथ हमारा न्याय करने की प्रतीक्षा कर रहा है, एक दयालु पिता के स्थान पर।

5) एक ऐसा परमेश्वर जो हमारी हर गलती का लेखा रखता है और हमारे अतीत को हमारे विरुद्ध रखता है, एक छुड़ाने वाले पिता के स्थान पर।

6) एक दोष लगाने वाला परमेश्वर, एक स्वीकार करने वाले पिता के स्थान पर।

7) एक ऐसा परमेश्वर जिसे प्रसन्न करना कठिन है और जिसके लिये हर बात को कमाना आवश्यक है, एक अत्यधिक अनुग्रह से परिपूर्ण पिता के स्थान पर।

8) एक ऐसा परमेश्वर जो नहीं चाहता कि हम उसके साथ सहभागिता करें, एक सामर्थ देने वाले पिता के स्थान पर।

9) एक ऐसा परमेश्वर जो हमारे लिये अपने कार्यों में सीमित है, एक अनन्त पिता के स्थान पर।

कुछ समय निकालकर **प्रार्थना करिए** और अपने जीवन पर सत्य की **घोषणा करिए** ताकि आपके हृदय और मन में हमारे स्वर्गीय पिता का सच्चा, बाइबिल आधारित चित्र स्थापित हो सके।

प्रिय स्वर्गीय पिता,

मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपका वचन मुझे आपके विषय में और इस विषय में प्रकट करता है कि आप वास्तव में कौन हैं।

आज मैं उन सभी गलत धारणाओं, विचारों और भ्रांतियों को अस्वीकार करता हूँ जिन्हें मैंने आपके विषय में धारण किया था, और मैं आपके वचन में प्रस्तुत सत्य को ग्रहण करता हूँ।

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***कभी ना बदलने वाले*** *स्वर्गीय पिता हैं; मैं सदैव आप पर भरोसा और निर्भर कर सकता हूँ।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे कभी ***न छोड़ने वाले*** *स्वर्गीय पिता हैं; आप मुझे कभी नहीं छोड़ेंगे, त्यागेंगे या निराश करेंगे।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***उदार और दानी*** *पिता हैं; आप सदैव उदारता से प्रबन्ध करेंगे और मुझ से कोई भी अच्छी वस्तु नहीं रोकेंगे।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***दयालु*** *पिता हैं; आप सदैव कृपालु हैं और मेरे पापों, असफलताओं और गलतियों को क्षमा करने के लिये तैयार रहते हैं।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***छुड़ाने*** *वाले पिता हैं; जब मैं चूक जाता हूँ तब भी आप सदैव मुझे पुनर्स्थापित करने, फिर से बनाने, पुनः प्राप्त करने और ऊपर उठाने का कार्य करते हैं।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***स्वीकार*** *करने वाले पिता हैं, जो सदैव मुझे अपनी उपस्थिति में स्वागत करते हैं और इस बात से आनन्दित होते हैं कि मैं आपका हूँ।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप ***अत्यधिक अनुग्रह*** *से परिपूर्ण मेरे पिता हैं, जो मुझे ऐसी सम्पत्तियाँ,*

आशीषें और वरदान देते हैं जिनका मैं योग्य नहीं हूँ और जिन्हें मैं कमा नहीं सकता।

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***सामर्थ*** *देने वाले पिता हैं, जो सदैव मुझ पर विश्वास करते हैं और मुझे उस स्थान तक पहुँचने योग्य बनाते हैं जो आपने मेरे लिये ठहराया है।*

मैं स्वीकार करता हूँ और आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे ***अनन्त पिता*** *हैं, मेरी किसी भी आवश्यकता से अनन्त गुणा महान, किसी भी परिस्थिति से अनन्त गुणा सामर्थी, और किसी भी स्थिति से अनन्त गुणा बुद्धिमान।*

मैं आप से प्रेम करता हूँ और आप पर भरोसा रखता हूँ। आपका सन्तान होने के आनन्द और विशेषाधिकार के लिये धन्यवाद।

यीशु के नाम में!
आमीन।

चिंतन

1) हमारे स्वर्गीय पिता के इन पहलुओं में से कौन-सा आज आपको विशेष रूप से महत्वपूर्ण और प्रासंगिक प्रतीत होता है, और क्यों?

- एक कभी ना बदलने वाले स्वर्गीय पिता हैं
- एक कभी न छोड़ने वाले स्वर्गीय पिता
- एक उदार और दानी पिता
- एक दयालु पिता
- एक छुड़ाने वाले पिता

- एक स्वीकार करने वाले पिता
- अत्यधिक अनुग्रह से परिपूर्ण पिता
- एक सामर्थ देने वाले पिता
- एक अनन्त पिता

2) इन पहलुओं के प्रकाश में, जिन पर हमने विचार किया है, आपके स्वर्गीय पिता के विषय में आपकी समझ और इसलिए उनके साथ आपका सम्बन्ध किस प्रकार परिवर्तित हुआ है?

4
पिता के प्रेम को प्राप्त करना

परमेश्वर-जैसा प्रेम

बाइबल, परमेश्वर के समान प्रेम के लिये यूनानी शब्द '*अगापे*' का उपयोग करती है। 1 कुरिन्थियों 13 हमें उस प्रकार के प्रेम की एक संक्षिप्त झलक देता है जो परमेश्वर का है और जिसमें हमें चलना है। आइए इसे इस दृष्टिकोण से पढ़ें कि यह उस प्रेम का वर्णन है जो परमेश्वर हमारे लिये रखते हैं।

1 कुरिन्थियों 13:4-8
[4]प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं,
[5]वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
[6]कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
[7]वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
[8]प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।

- *परमेश्वर प्रेम हैं* (1 यूहन्ना 4:8)।
- परमेश्वर हमारे प्रति धीरजवन्त और कृपालु हैं।
- परमेश्वर हमारे प्रति अशिष्ट व्यवहार नहीं करते।
- परमेश्वर "स्वार्थी" नहीं हैं, बल्कि वास्तव में हमारे विषय में चिन्ता रखते हैं।
- परमेश्वर शीघ्र क्रोधित नहीं होते।

- परमेश्वर हमारे प्रति बुरा नहीं सोचते।
- परमेश्वर अधर्म से आनन्दित नहीं होते।
- परमेश्वर सत्य से आनन्दित होते हैं—जब हम सत्य में चलते हैं।
- परमेश्वर सब कुछ सह लेते हैं।
- परमेश्वर हमारे लिये सर्वोत्तम पर विश्वास और आशा रखते हैं (अर्थात् हमारे लिये सर्वोत्तम करने की इच्छा और दृढ़ निश्चय रखते हैं)।
- परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम में स्थिर बने रहते हैं। उनका प्रेम स्थायी है। यह प्रेम कभी समाप्त नहीं होता, सूखता नहीं और न ही इसका अन्त होता है। यह प्रेम बना रहता है, बना रहता है, बना रहता है ... यह अनन्त है ... जैसा कि उन्होंने यिर्मयाह 31:3 में कहा है, *"यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है : मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।"*
- परमेश्वर कभी असफल नहीं होते। हमारे प्रति उनका प्रेम कभी असफल या दुर्बल नहीं पड़ता।

इसी प्रकार परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं। हमें इसे ग्रहण करना चाहिए, इसे स्वीकार करना चाहिए और इसे अपने भीतर गहराई तक बसने देना चाहिए कि परमेश्वर हमसे इस प्रकार प्रेम करते हैं।

आइए हम कुछ बातों को फिर से दोहराएँ और परमेश्वर के हमारे प्रति प्रेम के विषय में कुछ अतिरिक्त बातों को भी प्रस्तुत करें, और फिर इस प्रेम को जानने, विश्वास करने, ग्रहण करने और उसमें विश्राम करने के महत्व पर चर्चा करें।

प्रेम जो बिना शर्त का है

परमेश्वर का प्रेम बिना किसी शर्त का है। यह "किसी शर्त" के साथ नहीं

आता। वह केवल हमें अपना प्रेम ग्रहण करने और उसका प्रत्युत्तर देने के लिये आमंत्रित करते हैं।

1 यूहन्ना 4:9,10
[9]जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।
[10]प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।

ऐसा नहीं था कि हम परमेश्वर को खोज रहे थे। बल्कि, परमेश्वर अपने प्रेम में हमें खोजने आए। और अपने महान प्रेम के कारण, उन्होंने वह सब हटाने के लिये एक बड़ा मूल्य चुकाया जो हमें उन्हें जानने, उनके परिवार का भाग बनने और हमारे प्रति उनकी भलाई का अनुभव करने से रोकता था। उन्होंने पूरा मूल्य स्वयं चुका दिया।

परमेश्वर हमसे प्रेम इसलिए नहीं करते क्योंकि हमने कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, या हम बुद्धिमान हैं, या हमने कुछ किया है। अब हम केवल उनके प्रेम को ग्रहण कर सकते हैं और उसका प्रत्युत्तर दे सकते हैं।

1 यूहन्ना 4:19
हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

अनोखा प्रेम

यूहन्ना 16:26,27
[26]उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे; और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से विनती करूँगा;
[27]क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रेम रखा है और यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की ओर से आया।

प्रभु यीशु ने अपने चेलों को बताया कि "उस दिन," अर्थात् उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद के समय में, हम उनके

नाम से सीधे पिता से प्रार्थना करेंगे। उन्होंने कहा कि हम ऐसा कर सकते हैं और उन्हें हमारे लिये विनती करने की आवश्यकता नहीं होगी। हम यीशु के नाम से सीधे पिता से इसलिए माँग सकते हैं क्योंकि पिता स्वयं हमसे प्रेम करते हैं, क्योंकि हम यीशु से प्रेम करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। जब प्रभु यीशु ने कहा कि पिता स्वयं हमसे प्रेम करते हैं, तब यह ध्यान देने योग्य है कि उन्होंने "प्रेम" के लिये एक भिन्न यूनानी शब्द *'फिलियो'* का उपयोग किया, जो मित्रता और स्नेह को प्रकट करता है। वास्तव में, प्रभु यीशु यह कह रहे थे, "पिता स्वयं तुम्हारे मित्र हैं और तुम्हारे प्रति अत्यन्त स्नेह रखते हैं।"

- यह कहिए: *"पिता स्वयं मुझ से प्रेम करते हैं। मेरे स्वर्गीय पिता मेरे मित्र हैं और मेरे प्रति अत्यन्त स्नेह रखते हैं। मैं यीशु के नाम में विश्वास के साथ अपनी प्रार्थनाएँ उनके सामने रखता हूँ।"*

पिता आप से उसी प्रकार प्रेम करते हैं जैसे वह यीशु से प्रेम करते हैं

यूहन्ना 17:23,26

[23]मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा। [26]मैं ने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उनमें रहे, और मैं उनमें रहूँ।"

वचन 23 में, यीशु पुष्टि करते हैं कि पिता हमसे उसी प्रकार (रीति और मात्रा में) प्रेम करते हैं जैसे वह यीशु से प्रेम करते हैं।

- यह कहिए: *"पिता मुझ से उसी प्रकार प्रेम करते हैं जैसे वह यीशु से करते हैं। पिता मुझे उसी प्रकार प्रेम करते हैं जैसे वह यीशु से करते हैं।"*

वचन 26 में, प्रभु यीशु ने प्रार्थना की कि पिता का प्रेम हमारे भीतर हो—कि हम अपने हृदयों में पिता के प्रेम को अनुभव करें, जानें,

महसूस करें और उससे अभिभूत हो जाएँ—वही प्रेम जिससे पिता अपने पुत्र यीशु मसीह से प्रेम करते हैं।

- यह कहिए: *"मैं पिता के मेरे प्रति प्रेम को महसूस करता हूँ, जानता हूँ, अनुभव करता हूँ और उससे अभिभूत हूँ; वही प्रेम जिससे पिता यीशु से करते हैं।"*

हम सामान्यतः सोचते हैं कि जो सिद्ध है उससे उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक प्रेम किया जाएगा जो सिद्ध नहीं हैं। परन्तु यह सोचना अद्‌भुत है कि हम, जो असिद्ध हैं, पिता के द्वारा उसी प्रकार प्रेम किए जाते हैं जैसे वह अपने सिद्ध पुत्र से प्रेम करते हैं।

यह प्रेम अनोखा और निष्पक्ष है

परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करते (रोमियों 2:11)। परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता (प्रेरितों के काम 10:34)। हम यह जानते हैं। फिर भी, अक्सर परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में हम सोचते हैं कि कुछ अन्य विश्वासी हमसे अधिक प्रिय या अधिक अनुग्रहित हैं। इस पर विचार करिए। परमेश्वर अपने पुत्र का भी पक्ष नहीं करते—वह उनसे हमसे अधिक प्रेम नहीं करते। तो क्या वह किसी और का पक्ष करेंगे, और उनसे हमसे अधिक प्रेम करेंगे? परमेश्वर का हमारे प्रति प्रेम निष्पक्ष है।

हम प्रियतम में हैं और परमेश्वर के प्रिय हैं

मरकुस 1:11
और यह आकाशवाणी हुई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ।"

पिता ने यीशु को अपना प्रिय पुत्र कहा। प्रेरित पौलुस हमें बताते हैं कि हम भी *"परमेश्वर के प्रिय"* हैं और *"प्रियतम में ग्रहण किए गए हैं।"*

रोमियों 1:7
उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं: हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

इफिसियों 1:6
कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंतमेंत दिया।

- यह कहिए: *"मैं प्रियतम में हूँ, और मैं परमेश्वर का प्रिय हूँ। परमेश्वर मुझ से अपने प्रिय के समान प्रेम करते हैं।"*

प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, कि पिता का प्रेम हमारे हृदयों में हो ताकि हम उसे व्यक्तिगत रूप से महसूस करें, जानें और अनुभव करें (यूहन्ना 17:26)। इस प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को हमारे हृदयों में भेजकर दिया।

रोमियों 5:5
और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में उंडेला जाता है। पवित्र आत्मा ही वह हैं जो हमें पिता के प्रेम का व्यक्तिगत अनुभव कराते हैं। पवित्र आत्मा ही वह हैं जो हमें पिता के प्रेम में चलने की सामर्थ्य देते हैं।

ऐसा प्रेम जो हमें लज्जित नहीं होने देता

बाइबल सिखाती है कि *"... प्रेम बहुत से पापों को ढाँप देता है ..."* (नीतिवचन 10:12; 1 पतरस 4:8)।

प्रेम ढाँप देता है। वह वस्त्र पहनाता है। वह सुरक्षा देता है। प्रेम नग्नता और लज्जा को दूर करता है, और सम्मान, सुरक्षा तथा आदर

प्रदान करता है।

परमेश्वर का प्रेम हमारे लिये यही करता है।

इफिसियों 1:4
जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

कुलुस्सियों 1:21,22
[21]तुम जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे;
[22]उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

हम परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र, निष्कलंक (निर्दोष) और निर्दोष हैं क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं!

अटूट प्रेम

कोई भी वस्तु हमें पिता के प्रेम से अलग, रोक, बाधित या अलग नहीं कर सकती। उनका प्रेम कभी हमारा साथ नहीं छोड़ता। इसे व्यक्त करने का इससे बेहतर तरीका शायद नहीं हो सकता जो हम रोमियों 8 में पढ़ते हैं।

रोमियों 8:35-39
[35]कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?
[36]जैसा लिखा है, "तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।"
[37]परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
[38]क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई,

[39]न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

जीवन हमारे सामने चाहे जो भी लाए, हम पिता के प्रेम से अलग नहीं किए जा सकते। मनुष्य की कोई शक्ति, नरक की कोई सामर्थ, कोई विपत्ति, कोई आपदा, कोई चुनौती—कुछ भी हमें यीशु मसीह में पिता के प्रेम से अलग नहीं कर सकता। हमारा प्रति उनका प्रेम अटूट है। हर परिस्थिति और हर स्थिति में, चाहे हम किसी भी बात का सामना करें, हम निश्चिन्त और विश्वास से भरे रह सकते हैं कि पिता हमसे प्रेम करते हैं।

ऐसा प्रेम जो हमें जयवन्त से भी बढ़कर बनाता है

पौलुस पुष्टि करते हैं कि पिता के अटूट प्रेम के कारण, इन सब बातों में—सबसे कठिन परिस्थितियों में भी—हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

रोमियों 8:37
परन्तु इन सब बातों में उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं।"

जयवन्त से भी बढ़कर होने का अर्थ है अत्यन्त महान विजय प्राप्त करना, निर्णायक विजय प्राप्त करना, पूर्ण विजय प्राप्त करना, सब पर पूरी तरह जय पाना और केवल विजय ही नहीं बल्कि उससे भी अधिक प्राप्त करना।

जब सबसे कठिन परिस्थितियाँ हमारे विरुद्ध आती हैं, तब भी, हमारे प्रति उनके प्रेम के कारण, हम अत्यन्त महान विजय प्राप्त करते हैं और पूर्ण विजेता बनते हैं! उनका प्रेम हमें सम्पूर्ण विजेता बनाकर बाहर निकालता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो भी बातें हमारे विरुद्ध आती हैं, वे हमें मसीह में पिता के प्रेम से अलग करने में असफल

रहती हैं!

इसलिए, सबसे कठिन परिस्थितियों के बीच भी, हम सिर ऊँचा करके विजेताओं, जयवन्तों और जयवन्त से भी बढ़कर लोगों के समान चल सकते हैं! हम हर बार विजय प्राप्त करते हैं क्योंकि पिता हमसे प्रेम करते हैं।

ऐसा प्रेम जो हमें बन्धनों से मुक्त करता है

भय में यातना होती है। एक और स्थान जहाँ यातना होती है वह नरक है। भय में जीना नरक में जीने के समान है, एक यातना के स्थान में।

सिद्ध प्रेम सारे भय को दूर कर देता है। वह हमें भय से स्वतंत्र करता है। सिद्ध प्रेम केवल एक ही स्रोत से आता है—परमेश्वर से।

सिद्ध प्रेम का अनुभव हमें स्वतंत्र कर देता है।

1 यूहन्ना 4:17,18
[17]इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है वैसे ही संसार में हम भी हैं।
[18]प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है; क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

1 यूहन्ना 4:17,18 (एम्प्लीफाइड बाइबल अंग्रेजी बाइबल)
[17] इसी में [उसके साथ एकता और सहभागिता में], प्रेम हमारे भीतर सिद्ध और पूरा होता है, ताकि न्याय के दिन हमें भरोसा और साहस मिले [उसका सामना करने के लिए निश्चय और साहस के साथ]; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस संसार में हैं।
[18] प्रेम में भय नहीं होता [डर का अस्तित्व नहीं होता]। परन्तु सिद्ध (पूर्ण, परिपक्व) प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय में [ईश्वरीय दण्ड की अपेक्षा] होती है। इसलिए जो व्यक्ति डरता है [परमेश्वर के न्याय से], वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ [परमेश्वर के प्रेम की पर्याप्त समझ में विकसित नहीं हुआ]।

सिद्ध प्रेम वह प्रेम है जो पूर्ण और परिपक्व है। इसका सम्बन्ध हमारे परमेश्वर के हमारे प्रति प्रेम की पर्याप्त समझ में बढ़ने से है।

हमारे भीतर प्रेम के सिद्ध होने के लिये आवश्यक है कि हम पिता के हमारे प्रति महान प्रेम की व्यक्तिगत और अनुभवात्मक समझ में बढ़ें। पिता के प्रेम पर इस सम्पूर्ण अध्ययन का यही उद्देश्य है—कि हम पिता के हमारे प्रति महान प्रेम की व्यक्तिगत और अनुभवात्मक समझ में बढ़ें।

जब ऐसा होता है, तब हम बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। हम परमेश्वर के न्याय, दण्ड या दोष के भय, आतंक और यातना से स्वतंत्र हो जाते हैं!

यहीं और अभी, जब प्रेम हमारे भीतर सिद्ध होता है, अर्थात् जब हम परमेश्वर के प्रेम की पर्याप्त रूप से समझने लगते हैं, तब हम परमेश्वर के न्याय, दण्ड और दोष के भय, आतंक और यातना से पूरी तरह मुक्त हो जाते हैं। हम अपने स्वर्गीय पिता के साथ अपने सम्बन्ध में पूर्णतः स्वतंत्र हो जाते हैं। हमारे भीतर उनके प्रति गहरा आदर और भय रहता है और हम उन्हें पूरा सम्मान देते हैं, परन्तु हम उनके प्रति अस्वस्थ भय और आतंक से पूर्णतः मुक्त होते हैं। हम उनके पास इस भय के बिना आते हैं कि वह हमें दोषी ठहराएँगे, न्याय करेंगे या अस्वीकार करेंगे।

जैसे वह (यीशु) हैं, वैसे ही हम भी इस संसार में हैं। (1 यूहन्ना 4:17)

- आत्मिक जगत में हमारी स्थिति वही है जो यीशु की है!
- पिता के सामने हमारी स्थिति वही है जो यीशु की है!
- अन्धकार की शक्तियों के सामने हमारी स्थिति वही है जो यीशु की है!

"...जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं" (1 यूहन्ना 4:17)। इसलिए हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने या दुष्टात्माओं के सामने भयभीत या आतंकित नहीं होते।

पिता के प्रेम का अनुभव हमें इन सब से मुक्त करता है ...

- हर प्रकार के दोष, लज्जा और दोषी ठहराए जाने की भावना से। हम उनके प्रेम से ढँके हुए पवित्र और निष्कलंक हैं। (इफिसियों 1:4)
- अप्रिय या अस्वीकार किए जाने की भावना से। हम प्रियतम में पूरी तरह और सम्पूर्ण रूप से स्वीकार किए गए हैं। (इफिसियों 1:6)
- उनके प्रेम को कमाने या उसके योग्य सिद्ध होने की आवश्यकता से। उन्होंने हमसे तब भी प्रेम किया जब हम उन्हें जानते भी नहीं थे। (1 यूहन्ना 4:9,10)
- हर प्रकार की अयोग्यता और मूल्यहीनता की भावना से। अपने प्रेम में उन्होंने हमें अपने पुत्र और पुत्रियाँ बना लिया है। (इफिसियों 1:5)
- बन्धुआ, गुलाम या फँसा हुआ महसूस करने से। आप स्वतंत्र हैं। उन्होंने हमें दासत्व की आत्मा नहीं दी कि हम दासों के समान भय करें। (रोमियों 8:15)
- नियंत्रित, चालाकी से उपयोग किए जाने या शोषित होने की हर भावना से। हम उनके प्रेम के द्वारा सामर्थी बनाए गए हैं।
- हमारे जीवन के हर भय से—भविष्य का भय, असफलता का भय, कमी और अपर्याप्तता का भय। उनका सिद्ध प्रेम सारे भय को दूर कर देता है। (1 यूहन्ना 4:18)

हमारी अधूरी अपेक्षाएँ उसके प्रेम में समाधान पाती हैं।

हमारे जीवन के अप्रत्याशित, समझ से परे और उलझन भरे अनुभव और घटनाएँ, जो कभी ऐसा प्रतीत होती थीं मानो उन्होंने हमें तोड़ दिया हो, अब महत्वहीन लगने लगती हैं, और हम उसके प्रेम के कारण जयवन्त से भी बढ़कर उठ खड़े होते हैं।

यहाँ तक कि हमारी अपनी गलतियाँ, बुरे चुनाव और गलत निर्णय भी उसके प्रेम में मिट जाते हैं, और हम बिना लज्जा के खड़े रहते हैं, यह जानते हुए कि हम प्रिय हैं और प्रियतम में पूरी तरह स्वीकार किए गए हैं!

जब हम उसके प्रेम को ग्रहण करते हैं, तब हम उन सब बातों से मुक्त हो जाते हैं जो हमें दबाती हैं।

सामान्यतः यह कहा जाता है कि प्रत्येक मनुष्य की भावनात्मक आवश्यकता के तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र होते हैं—**सुरक्षा,आत्म-मूल्य** और **महत्त्व।** जब हम प्रेम में सिद्ध हो जाते हैं, तब हम अपने 3 क्षेत्रों — सुरक्षा, आत्म-मूल्य और महत्त्व—को पिता के हमारे प्रति प्रेम में दृढ़ता से स्थापित कर सकते हैं। हमारी **सुरक्षा** पिता के हमारे प्रति प्रेम में है। कोई भी वस्तु हमें उसके प्रेम से अलग नहीं कर सकती। हमारा **आत्म-मूल्य** पिता के हमारे प्रति प्रेम में है। हम प्रियतम में हैं और परमेश्वर के प्रिय हैं। हमारा **महत्त्व** पिता के हमारे प्रति प्रेम में है। आत्मिक जगत में हमारी स्थिति पहले ही सुनिश्चित की जा चुकी है—*जैसा वह है वैसे ही हम भी इस संसार में हैं* (1 यूहन्ना 4:17)।

उस प्रेम को जानिए, विश्वास कीजिए, ग्रहण कीजिए और उसमें विश्राम कीजिए जो परमेश्वर आप से रखते हैं

1 यूहन्ना 4:16

जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए और हमें उसका विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

यूहन्ना यहाँ लिखते हैं कि हम उस प्रेम को जान गए हैं, और उस प्रेम पर विश्वास करते हैं जो परमेश्वर हमसे रखते हैं। परमेश्वर प्रेम हैं—हम उन्हें स्वीकार करते हैं और उनके प्रेम को ग्रहण करते हैं। हम परमेश्वर के प्रेम में बने रहते हैं। हमें पिता के हमारे प्रति प्रेम को जानना, उस पर विश्वास करना, उसे ग्रहण करना और उसमें बने रहना चाहिए।

जानना

जानने का अर्थ है ज्ञान रखना, समझना, पूर्ण रूप से जानना और निश्चित होना। अब तक हमने जो कुछ देखा है, उसमें हमने पिता के हमारे प्रति प्रेम के सत्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमने पवित्रशास्त्र पढ़ा है और हम जानते हैं कि पिता हमसे प्रेम करते हैं।

विश्वास करना

अब हमें विश्वास करना चाहिए। हमें पिता के प्रेम पर विश्वास रखना, स्वयं को उसके प्रति समर्पित करना और उस पर भरोसा करना चाहिए। हम उस प्रेम पर विश्वास करते हैं जो परमेश्वर हमसे रखते हैं। हमने परमेश्वर का वचन पढ़ा है। उनका वचन सत्य है। परमेश्वर का वचन हमारे प्रति उनके महान प्रेम के विषय में हमसे झूठ नहीं बोल रहा है। क्रूस हमें परमेश्वर के महान प्रेम के विषय में झूठ नहीं बोल रहा है। हम उस प्रेम पर विश्वास करते हैं जो पिता हमसे रखते हैं।

ग्रहण करना—व्यक्तिगत अनुभव करना

जब हम विश्वास करते हैं, तब हम ग्रहण कर सकते हैं, अर्थात् उसे अपना बना सकते हैं। हम व्यक्तिगत रूप से पिता के हमारे प्रति प्रेम का अनुभव करते हैं। परमेश्वर प्रेम हैं। यही उनका स्वभाव है। वह हमसे प्रेम करते हैं क्योंकि वह प्रेम हैं। हम पिता के प्रेम का अनुभव करने के लिये, केवल उसे ग्रहण करते हैं। हम केवल उन्हें अपने प्रेम

से हमें आलिंगन करने देते हैं।

आप उन्हें आप से प्रेम करने दीजिए क्योंकि वह प्रेम हैं, क्योंकि वह आपके पिता हैं ...

... इसलिए नहीं कि आप उनके सबसे अच्छे बच्चे रहे हैं।

... इसलिए नहीं कि आपने इसे कमाया है।

... इसलिए नहीं कि आपने उनके लिये बहुत कुछ किया है।

उन्हें आप से प्रेम करने दीजिए क्योंकि वह केवल चाहते हैं कि आप उनके प्रेम को ग्रहण करें।

यही वह बात है जिसके लिये पौलुस ने प्रार्थना की थी, जैसा हमने पहले एक अध्याय में देखा। हमें व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा उस अपरिमेय प्रेम को जानना है जो परमेश्वर हमसे रखते हैं, और फिर हमें पिता के प्रेम में गहराई से जड़ पकड़नी है और दृढ़ता से स्थापित होना है।

इफिसियों 3:17-19 (एम्प्लीफाइड बाइबल अंग्रेजी बाइबल)
[17] ताकि मसीह विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में वास करे। और तुम, जो प्रेम में [गहराई से] जड़ पकड़े हुए और [मज़बूती से] स्थापित किए गए हो,
[18] सब पवित्र लोगों (परमेश्वर के लोगों) के साथ मिलकर उसके प्रेम की चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को समझने में पूरी तरह समर्थ हो जाओ [उस अद्‌भुत और अनन्त प्रेम का पूरा अनुभव करते हुए];
[19] और [कि तुम आओ] मसीह के उस प्रेम को जानने में [व्यावहारिक रूप से, व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा], जो [सिर्फ] ज्ञान [बिना अनुभव के] से कहीं बढ़कर है, ताकि तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व में परमेश्वर की सारी भरपूरी तक भर जाओ [ताकि तुम अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति का सबसे समृद्ध अनुभव प्राप्त करो, और पूरी तरह परमेश्वर से भर जाओ]।

जब हम पिता के प्रेम का प्रकटीकरण प्राप्त करते हैं, तब हमारी

सभी भावनात्मक आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं और हमें पूर्ण स्वीकृति का अनुभव होता है। पिता के प्रेम को ग्रहण करना गहरी भावनात्मक चंगाई लाता है और हमें भावनात्मक सम्पूर्णता और कुशलता के स्थान में ले आता है। इसी स्थान में हम अपनी सम्पूर्ण पहचान भी पाते हैं कि हम उसके पुत्र या पुत्री हैं।

विश्राम करना—बने रहना, जड़ पकड़ना, दृढ़ता से स्थापित होना, उसके प्रेम में शान्त होना

1 यूहन्ना 4:16 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल)
"हम इसे भली-भाँति जानते हैं, हमने अपने पूरे हृदय और प्राण से उस प्रेम को अपना लिया है जो परमेश्वर से आता है।"

एक बार जब हम उसके प्रेम का अनुभव कर लेते हैं, तब हमें पिता के हमारे प्रति प्रेम में बने रहना चाहिए। बने रहने का अर्थ है टिके रहना, स्थिर रहना, बस जाना, स्थायी निवास करना, विश्राम करना, जड़ पकड़ना और पिता के प्रेम में दृढ़ता से स्थापित होना। यह केवल कभी-कभी आने या बार-बार आकर जाने जैसा नहीं है, मानो हम पिता के प्रेम का अनुभव करते हुए आते-जाते रहें। हमें उसमें बने रहना है, पिता के प्रेम में विश्राम करना है। और फिर हम उसी विश्राम और उसके प्रेम में बने रहने के स्थान से जीवन जीते हैं।

जब हम पिता के प्रेम में विश्राम करते हैं, तब हम किसी भी बात को हमें विचलित नहीं करने देते। कुछ भी हमें हिला नहीं सकता। आँधियाँ आएँगी। प्रचण्ड वायु चलेगी। लहरें उठेंगी। कठिन परिस्थितियाँ और हालात आएँगे, परन्तु हम उनके प्रेम में विश्राम कर रहे होंगे। हम उस स्थान में होंगे जो हमें उनके प्रेम के कारण जयवन्त से भी बढ़कर बनाता है।

जब हम उसके प्रेम में विश्राम करते हैं, तब लोग हम पर आक्रमण कर सकते हैं। वे हमारी निन्दा कर सकते हैं, झूठे आरोप लगा सकते हैं, हमारा विरोध कर सकते हैं और हमें रोक सकते हैं, परन्तु इनमें से कोई भी बात हमें नहीं हिलाती। हम बदला लेने या स्वयं का बचाव करने तक की इच्छा नहीं रखते। हम उनके प्रेम में स्थिर हो चुके हैं। हम प्रेम के साथ प्रत्युत्तर देते हैं। हम वही करते हैं जो प्रेम करता।

सपन्याह 3:17
तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है,
वह उद्धार करने में पराक्रमी है;
वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा,
वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा;
फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।

परमेश्वर हमें अपने प्रेम से शान्त करते हैं। एक रोते हुए बच्चे की कल्पना कीजिए। माता / पिता उसे अपनी बाँहों में उठा लेते हैं, उसे स्नेहपूर्वक थामते हैं, उसे शान्त करते हैं और शीघ्र ही वह बच्चा शान्तिपूर्वक सो जाता है। इसी प्रकार, परमेश्वर हमें शान्त करते हैं, स्थिर करते हैं और विश्राम देते हैं। वह हमें अपने अटूट, कभी न समाप्त होने वाले और अपरिमेय प्रेम का आश्वासन देते हैं। पिता के प्रेम का यह आश्वासन, जो परमेश्वर की आत्मा के द्वारा हमारे पास लाया जाता है, हमारी आत्मा पर छा जाता है। हम उसके प्रेम से शान्त किए जाते हैं।

हमें उनके प्रेम में विश्राम करना और उस प्रेम में से जीवन जीना सीखना चाहिए जो वह हमसे रखते हैं। अगले अध्याय में, हम और विस्तार से देखेंगे कि उसके प्रेम में बने रहने का क्या अर्थ है।

पिता के प्रेम को ग्रहण करने और उसका अनुभव करने के लिए प्रार्थना

प्रिय स्वर्गीय पिता,

मेरे प्रति आपके महान प्रेम का आश्वासन, मेरे हृदय को भर दे, और मुझ पर आकर मुझे ढाँप ले, आवृत कर ले और वस्त्र पहनाए। अभी भी मुझे आपके मेरे प्रति महान प्रेम का व्यक्तिगत और वास्तविक अनुभव दीजिए। पवित्र आत्मा, कृपया पिता के प्रेम को नए सिरे से मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व में उंडेल दीजिए। परमेश्वर का प्रेम मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व, मेरे हृदय, मेरे मन, मेरी इच्छा और भावनाओं को भर दे। मेरे मन के घायल भागों में अपना प्रेम उंडेल दीजिए और मुझे चंगा कर दीजिए। मुझे सम्पूर्ण बना दीजिए।

सारी चोट, पीड़ा और नकारात्मक भावनाएँ धुल जाएँ। हर दोष, लज्जा, अस्वीकृति, अकेलेपन की भावना, त्याग दिए जाने की भावना और अलगाव की भावना आपके प्रेम से धुल जाए। हर प्रकार के भय को धो डालिए—भविष्य का भय, असफलता का भय, दूसरों से प्रेम करने का भय, दूसरों को मुझे प्रेम करने देने का भय, लोगों पर भरोसा करने का भय।

पिता का प्रेम मेरे घमण्ड, आत्मनिर्भरता, मेरी भावनात्मक दीवारों और उन बचावों को तोड़ दे और नष्ट कर दे जिन्हें मैंने खड़ा किया है, जो मुझे आपके प्रेम का अनुभव करने से रोकते हैं।

मुझे मेरे बन्धनों से मुक्त कर दीजिए—योग्य सिद्ध होने के बन्धन से, संघर्ष करने से, प्रेम और स्वीकृति कमाने के प्रयास से—और मुझे आपके अपरिमेय, असीम, बिना शर्त के और अपरिवर्तनीय प्रेम को ग्रहण करने के स्थान में ले आइए।

अपने प्रेम से मुझे शान्त कर दीजिए। मुझे आपके प्रेम में विश्राम के स्थान में ले आइए। मैं अपने स्वर्गीय पिता के आलिंगन को ग्रहण करता हूँ।

यीशु के नाम में। आमीन।

चिंतन

1) 1 कुरिन्थियों 13:4-8 पर परमेश्वर के समान प्रेम—उस प्रेम के वर्णन के रूप में मनन कीजिए जो परमेश्वर हमसे रखते हैं। इसे व्यक्तिगत रूप से अपने लिये पिता के प्रेम के वर्णन के रूप में लिखिए।

2) यूहन्ना 17:23,26 पर मनन कीजिए। पिता आप से उसी प्रकार प्रेम करते हैं जैसे वह यीशु से करते हैं, क्योंकि आप परमेश्वर के प्रिय हैं। इसका आपके लिये व्यक्तिगत रूप से क्या अर्थ है?

3) रोमियों 8:35-37 पर मनन कीजिए। हम इन सब बातों में जयवन्त से भी बढ़कर क्यों हैं? इससे जीवन की परिस्थितियों के प्रति आपका दृष्टिकोण कैसे प्रभावित होता है?

4) ऐमप्लिफाइड बाइबल में 1 यूहन्ना 4:17,18 को देखिए और चर्चा कीजिए कि हमारे भीतर उसका प्रेम सिद्ध होने का क्या अर्थ है। हम उस स्थान तक कैसे पहुँच सकते हैं जहाँ उसका प्रेम हमारे भीतर सिद्ध हो जाए? इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

5
पिता के प्रेम में बने रहना

पिता के प्रेम को स्वीकार कीजिए—"मेरा पिता मुझ से प्रेम करता है"

यीशु और उनके पिता के सम्बन्ध को देखना अद्‌त है। प्रभु यीशु अक्सर अपने पिता के उनके प्रति प्रेम को स्वीकार और प्रकट करते थे। वह यह भी पहचानते और स्वीकार करते थे कि पिता, यीशु के प्रति अपने प्रेम के कारण क्या कर रहे थे।

यूहन्ना 3:35
पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं।

पिता ने सब कुछ यीशु के हाथों में सौंप दिया था।

यूहन्ना 5:20
क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।

पिता वह सब प्रकट कर रहे थे जो वह स्वयं कर रहे थे, और वह यीशु को इससे भी बड़े काम दिखाने वाले थे।

यूहन्ना 17:24
हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।

यीशु ने पिता से प्रार्थना की और अपनी इच्छा प्रकट की, क्योंकि

वह जानते थे कि पिता उनसे प्रेम करते हैं।

यूहन्ना 10:17
पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ।

इसके प्रत्युत्तर में, यीशु पिता की इच्छा को पूरा करने के लिये आज्ञाकारिता में चलते थे।

पिता हमसे उसी रीति और उसी मात्रा में प्रेम करते हैं जैसे वह यीशु से करते हैं। पिता हमसे प्रेम करते हैं और हमें इस पृथ्वी पर राज्य के कार्य सौंपते हैं। पिता हमसे प्रेम करते हैं और उन बातों को प्रकट करते हैं जिन्हें वह हमारे द्वारा करना चाहते हैं, और वह उन बातों से भी बड़े कार्य प्रकट करेंगे जो हमने अब तक देखे हैं। पिता हमसे प्रेम करते हैं और हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं। जैसे यीशु ने किया, वैसे ही हमें भी पिता के हमारे प्रति प्रेम को स्वीकार और प्रकट करना चाहिए।

मेरे प्रेम में बने रहो

यूहन्ना 15:9,10
[9]जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो।
[10]यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

प्रभु यीशु ने हमें अपने प्रेम में बने रहने के लिये आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि वह स्वयं भी पिता के प्रेम में बने रहते हैं। यीशु ने अपना पृथ्वी का जीवन पिता के प्रेम में बने रहकर जिया।

जैसा हमने पिछले अध्याय में कहा था, "बने रहना" का अर्थ है "विश्राम करना, निवास करना, स्थिर रहना, बने रहना, निरन्तर बने रहना।" इसका अर्थ है गहराई से जड़ पकड़ना, दृढ़ता से लगाए

जाना और सुरक्षित रूप से स्थापित होना। यह वह स्थान है जहाँ हम उसके प्रेम के द्वारा शान्त किए जाते हैं। "बने रहने" का यह भी अर्थ है कि हम "उसी से जीवन जीएँ, उसी से जीवन प्राप्त करें, उसी के कारण जीवन जीएँ, उसी के द्वारा जीवन जीएँ" जिसमें हम बने रहते हैं।

इस उदाहरण पर विचार कीजिए।

यूहन्ना 6:56,57,63
[56]जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में।
[57]जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा।
[63]आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।

"मेरा मांस खाना और मेरा लहू पीना" (यूहन्ना 6:56) का अर्थ है "यीशु पर निर्भर रहना"। जो यीशु पर निर्भर रहता है, वह यीशु में बना रहता है और इसलिए उसी के कारण जीवन जीता है या अपना जीवन उसी में से जीता है। अपने मांस और लहू की बात करते हुए, यीशु आत्मिक बातों की ओर संकेत कर रहे थे—जीवन देने वाली आत्मा की बातें और वे जीवित वचन जो उन्होंने बोले।

इसलिए, पिता के प्रेम में बने रहने का अर्थ है उनके प्रेम में विश्राम करना और उनके प्रेम में से जीवन जीना। हमें सदैव पिता के प्रेम में बने रहना है, अर्थात् उसके प्रेम में निवास करना और उसी के प्रेम में से जीवन जीना है।

पिता के प्रेम में विश्राम करना और उसी में से जीवन जीना

2 कुरिन्थियों 13:14
प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की

सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। आमीन।"

पौलुस ने अपने समापन आशीर्वचन में यह कहा कि परमेश्वर का प्रेम विश्वासियों के साथ बना रहे। इसका अर्थ है कि पिता के प्रेम का अनुभव केवल एक क्षणिक बात नहीं है। यह उसके प्रेम का निरन्तर, वर्तमान और प्रत्येक क्षण का अनुभव है। हमें प्रतिदिन के जीवन में पिता के प्रेम की निरन्तर पहचान और अनुभव में जीना चाहिए।

हम प्रतिदिन यह जानते हुए जीवन जीते हैं कि पिता हमसे अपरिमेय और बिना शर्त का प्रेम करते हैं। क्योंकि पिता का प्रेम सदा हमारे साथ, हमारे लिये और हमारी ओर है, इसलिए हम एक प्रिय पुत्र या पुत्री के समान जीवन जी सकते हैं। हम उन लोगों के समान जीवन जीते हैं जो प्रियतम में हैं और जो परमेश्वर के प्रिय हैं। हम उसके पुत्रों और पुत्रियों के रूप में अपनी पहचान में से जीवन जीते हैं। हम पुत्रत्व की भावना में से जीवन जीते हैं।

पिता के प्रेम में बने रहने (विश्राम करने) और उसके प्रेम में से जीवन जीने का क्या अर्थ है? व्यवहारिक रूप से यह कैसा दिखाई देता है? वह व्यक्ति जो पिता के प्रेम में विश्राम कर रहा है और पिता के प्रेम में से जीवन जी रहा है, अपने दैनिक जीवन में कैसे व्यवहार करेगा और कैसे चलेगा?

प्रेरित यूहन्ना ने स्वयं को *"वह चेला जिससे यीशु प्रेम रखते थे"* कहा (यूहन्ना 20:2; यूहन्ना 21:7,20)। इसलिए, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से उस प्रेम को ग्रहण किया और अनुभव किया जो प्रभु उनके लिये रखते थे। यूहन्ना अपनी पहली पत्री में परमेश्वर के प्रेम के विषय में बहुत कुछ लिखते हैं और परमेश्वर के प्रेम में बने रहने के व्यवहारिक पक्ष को समझाते हैं। यहाँ हम इसे पाँच सरल कथनों में संक्षेप और सार

रूप में प्रस्तुत करते हैं।

1) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब घृणा के लिये कोई स्थान नहीं रहता।

1 यूहन्ना 2:9-11
[9]जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूँ और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है।
[10]जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता।
[11]पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है, और नहीं जानता कि कहाँ जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आँखें अंधी कर दी हैं।

(यह भी देखें 1 यूहन्ना 3:14,15; 1 यूहन्ना 4:20,21)

यूहन्ना अपनी पत्री में इसे कई बार दोहराते हैं। जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसी में जीवन बिताते हैं, तब हम बहुत सावधान रहते हैं कि हमारे जीवन में किसी के प्रति घृणा न आने पाए। हम किसी अन्य भाई के प्रति घृणा को अपने भीतर स्थान नहीं लेने देते। घृणा बहुत खतरनाक है। यदि हमारे हृदय में किसी भाई के प्रति घृणा है, तो चाहे हम यह दावा करें कि हम ज्योति में चल रहे हैं, फिर भी हम उन लोगों के समान हैं जो अन्धे होकर अन्धकार में चलते हैं। हमें पता नहीं रहता कि हम कहाँ जा रहे हैं, हम टटोलते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, और अन्त में ठोकर खाकर गिर पड़ते हैं। (1 यूहन्ना 2:9-11)

हम लोगों को हमें ठेस पहुँचाने से नहीं रोक सकते, परन्तु हम ठेस को अपने भीतर स्थान देने से इन्कार कर सकते हैं। लोगों की कुछ बातें और कार्य हमें पीड़ा पहुँचा सकते हैं, परन्तु हम यह चुन सकते हैं कि उन्हें छोड़ दें और उस चोट को हर जगह अपने साथ न ढोएँ। ठेस और पीड़ा प्रायः सड़कर घृणा में बदल जाती है। घृणा हमें

अन्धा कर देती है और अन्धकार में छोड़ देती है। परन्तु जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसी में जीवन बिताते हैं, तब ठेस और पीड़ा हमारे भीतर स्थान नहीं पाती।

2) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब सताव हमें भयभीत नहीं करता और पवित्रता हमारी जीवन-शैली बन जाती है

1 यूहन्ना 3:1-3,13

[1]देखो, पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम हैं भी। इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।

[2]हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

[3]और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।

[13]हे भाइयो, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना।

यूहन्ना यह घोषणा करते हैं कि परमेश्वर ने हमें अपनी सन्तान बनाकर कितना महान और अत्यधिक प्रेम हम पर किया है। परन्तु परमेश्वर द्वारा इतना प्रेम किए जाने पर, कुछ बातों के लिए हमें तैयार रहना चाहिए...

- संसार हमें परमेश्वर की सन्तान के रूप में नहीं पहचानेगा और हमसे बैर भी रख सकता है।
- हम अपने आप को शुद्ध करते हैं जैसे वह शुद्ध है।

जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसी में जीवन बिताते हैं, तब हमें इस बात से आश्चर्य नहीं होता कि संसार हमें परमेश्वर की सन्तान के रूप में नहीं पहचानता। हमें इस बात से भी आश्चर्य नहीं होता कि संसार हमसे बैर रखे और हमें सताए।

हमारे पास यह अद्‌त आशा है कि क्योंकि हम उसकी सन्तान हैं,

इसलिए जब प्रभु प्रगट होंगे, तब हम उनके समान बना दिए जाएँगे। और इसी आशा के कारण हम अपने जीवन को शुद्ध करने का चुनाव करते हैं। इसलिए, जो लोग पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसी में जीवन बिताते हैं, उनके लिए पवित्रता जीवन जीने का तरीका बन जाती है। उनका प्रेम हमें पवित्रता की ओर खींचता है और उन सब बातों को अस्वीकार करने में सहायता करता है जो पिता को प्रसन्न नहीं करतीं।

3) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम बलिदान करते हैं और बाँटते हैं

1 यूहन्ना 3:16-18
[16]हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।
[17]पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है?
[18]हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

यह इसलिए है क्योंकि यीशु ने हमारे लिये अपना जीवन दे दिया; इसी के द्वारा और इसी में हम पिता के प्रेम को समझते, अनुभव करते और जानते हैं। यही हमें दूसरों के लिये भी ऐसा करने को प्रेरित करता है। हम दूसरों के लिये अपना जीवन दे देते हैं। हम दूसरों के लाभ के लिये बलिदान करते हैं। यह व्यवहारिक रूप में *"काम और सत्य के द्वारा"* (1 यूहन्ना 3:18) प्रकट होता है, जब हम दूसरों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये देते और बाँटते हैं।

प्रेरित पौलुस ने अपनी सेवकाई के विषय में यह बात इन शब्दों में कही।

2 कुरिन्थियों 5:14,15
[14]क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिये कि हम यह समझते

हैं कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए।
15और वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।

हम परमेश्वर के प्रेम के द्वारा प्रेरित, उत्साहित, प्रोत्साहित और कार्य करने के लिये विवश किए जाते हैं। हम जीवन को यीशु मसीह के उदाहरण के द्वारा देखते हैं। उन्होंने हमारे लिये अपना जीवन दे दिया। इसलिए अब हम अपने लिये नहीं, परन्तु यीशु के लिये जीते हैं।

यूहन्ना 15:12,13
12"मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।
13इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

प्रेम की सबसे महान अभिव्यक्ति अपने जीवन को दे देने में है। यीशु ने इसे दिखाया। उन्होंने क्रूस पर अपना जीवन दे दिया। व्यवहारिक रूप में, यद्यपि हम में से कुछ वास्तव में अपने जीवन का बलिदान दे सकते हैं, परन्तु हम में से बहुतों के लिये इसका अर्थ हो सकता है कि हम अपनी वस्तुएँ, अवसर, अधिकार आदि दूसरों के लाभ के लिये त्याग दें।

4) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम प्रेम में चलते हैं

1 यूहन्ना 4:7-12
7हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है।
8जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।
9जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।
10प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।
11हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।

[12]परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।

क्योंकि हमने पिता के प्रेम का इतना गहरा अनुभव किया है, इसलिए हम लोगों के प्रति प्रेम से भर उठते हैं। प्रेम में चलने का एक महान वर्णन हमें 1 कुरिन्थियों 13:4-8 में मिलता है; *"प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं..."* हम लोगों के साथ परमेश्वर के प्रेम के अनुसार व्यवहार करने का चुनाव करते हैं।

हम पिता के प्रेम के द्वारा उसके प्रेम में चलने के लिये सामर्थी बनाए जाते हैं। जब हम एक दूसरे से प्रेम रखते हैं, तब उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है—अर्थात् पूर्ण किया जाता है और अपने उद्देश्य तक पहुँचता है। जब हम प्रेम में चलते हैं, तब उसका प्रेम हमारे भीतर और हमारे द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करता है। यह स्वयं परमेश्वर का हमारे भीतर निवास करना और हमारे द्वारा कार्य करना है!

5) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम अपनी आत्मिक स्थिति को पहचानते हैं, भय से मुक्त होते हैं और परमेश्वर से प्रेम करने के लिये स्वतंत्र होते हैं

1 यूहन्ना 4:17-19

[17]इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है वैसे ही संसार में हम भी हैं।

[18]प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है; क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

[19]हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

जब परमेश्वर का प्रेम हम में सिद्ध हो जाता है, अर्थात् हम उस स्थान पर पहुँच जाते हैं जहाँ हमने उसके प्रेम को ग्रहण कर लिया है और उसे हमारे भीतर अपना पूरा कार्य करने दे रहे हैं...

- तब हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है और हम दण्ड और न्याय के सताने वाले भय में नहीं जीते।
- हम आत्मिक जगत में अपनी पहचान को समझते हैं—जैसा यीशु है, वैसे ही हम भी हैं (1 यूहन्ना 4:17)—और हम इसी सत्य में संसार में जीवन बिताते हैं।
- उसके प्रेम के कारण हम उसके प्रति प्रेम से भर जाते हैं।

संक्षेप में, जब हम पिता के प्रेम में विश्राम करते हैं और उसी में जीवन बिताते हैं, तब...

1) दूसरों के प्रति घृणा का हमारे भीतर कोई स्थान नहीं रहता।
2) सताव हमें विचलित नहीं करता।
3) पवित्रता हमारी जीवन-शैली बन जाती है।
4) हम दूसरों के लिये बलिदान करते हैं और बाँटते हैं।
5) हम परमेश्वर के प्रकार के प्रेम में चलते हैं।
6) हम अपनी आत्मिक स्थिति को पहचानते हैं—जैसा यीशु है वैसे ही हम भी हैं (1 यूहन्ना 4:17)—और उसी के अनुसार संसार में जीवन बिताते हैं।
7) हम परमेश्वर के सामने दोष और न्याय के भय से मुक्त हो जाते हैं।

8) हम उसके प्रति प्रेम से भर उठते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

आइए हम इसे स्वीकार करें और इसकी घोषणा करें।

मैं पिता के मेरे प्रति प्रेम में बना रहता हूँ। मैं पिता के प्रेम में विश्राम करता हूँ और उसी में जीवन बिताता हूँ। मेरे हृदय में घृणा का कोई स्थान नहीं है। यदि संसार मुझे नहीं पहचानता या मेरा सताव भी करता है, तो मैं विचलित नहीं होता। पवित्रता मेरी जीवन-शैली है। मैं अपने आप को शुद्ध करता हूँ जैसे वह शुद्ध है। मैं बलिदान करता हूँ, उदारता से देता हूँ और जो कुछ परमेश्वर ने मुझे दिया है उसे बाँटता हूँ। मैं लोगों के प्रति प्रेम में चलता हूँ। मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने अपने प्रेम के कारण मुझे उसमें क्या बनाया है। जैसा यीशु है, वैसा ही मैं भी हूँ—परमेश्वर का वारिस और मसीह के साथ सहभागी वारिस। मैं हर दोष, लज्जा और दण्ड से मुक्त हूँ। मैं अपने स्वर्गीय पिता से प्रेम करने के लिये स्वतंत्र हूँ। मैं उससे प्रेम करता हूँ क्योंकि पहले उसने मुझ से प्रेम किया।

आज्ञाकारिता—पिता के प्रेम में बने रहने की कुंजी

यीशु पिता की आज्ञाकारिता में चले...

यूहन्ना 8:29
मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।

यूहन्ना 14:31
परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूँ। उठो, यहाँ से चलें।

यूहन्ना 15:9,10
9जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो।

[10]यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

....और वैसे ही, हमें भी चलना है

यूहन्ना 14:15,21,23,24

[15]"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
[21]जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।"
[23]यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।
[24]जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।

यूहन्ना 15:9,10

[9]जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो।
[10]यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

1 यूहन्ना 2:5,6

[5]पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं:
[6]जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।

हम इन सभी पवित्रशास्त्र के भागों से देखते हैं कि प्रभु यीशु ने स्वयं इसका पालन किया और सिखाया, कि पिता के प्रेम में बने रहने के लिये, हमें उसके वचन की आज्ञाकारिता में चलना और उसके वचन को मानना आवश्यक है। जब हम ऐसा करते हैं, तब परमेश्वर का प्रेम, अर्थात् पिता का प्रेम, हम में सिद्ध होता है। परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलना पिता के प्रेम में विश्राम करने और उसी में जीवन बिताने के

लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम उनके वचन को मानते हैं और वैसे ही चलते हैं जैसे यीशु चले।

पिता की आज्ञाकारिता में चलना, ज्योति में चलना है जैसे वह स्वयं ज्योति में हैं, और इस प्रकार उसके साथ सहभागिता (घनिष्ठ मित्रता) सम्भव होती है। यही सहभागिता हमें प्रतिदिन उसके प्रेम में बने रहने (उसके प्रेम में विश्राम करने और उसी में जीवन बिताने) में समर्थ बनाती है।

1 यूहन्ना 1:6,7
[6]यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते;
[7]पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

आज्ञाकारिता पिता के प्रेम को अर्जित नहीं करती। वह हमसे असीम और बिना शर्त के प्रेम करते हैं।

आज्ञाकारिता वह है जो आप इसलिए करते हैं क्योंकि आप उससे प्रेम करते हैं। आप इसे प्रेम के कारण करते हैं।

आज्ञाकारिता हमें उसके साथ घनिष्ठ सहभागिता में बनाए रखती है, और इस प्रकार हमें पिता के प्रेम में बने रहने, उसमें विश्राम करने, उससे जीवन प्राप्त करने और उसी में जीवन बिताने योग्य बनाती है।

चिंतन

1) हमारे लिये यह स्वीकार करना और घोषित करना क्यों महत्वपूर्ण है कि हमारे स्वर्गीय पिता हमसे प्रेम करते हैं?

2) हमने आठ परिणामों का उल्लेख किया जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसी में जीवन बिताते हैं।

(i) दूसरों के प्रति घृणा का हमारे भीतर कोई स्थान नहीं रहता।

(ii) सताव हमें विचलित नहीं करता।

(iii) पवित्रता हमारी जीवन-शैली बन जाती है।

(iv) हम दूसरों के लिये बलिदान करते हैं और बाँटते हैं।

(v) हम परमेश्वर के प्रकार के प्रेम में चलते हैं।

(vi) हम अपनी आत्मिक स्थिति को पहचानते हैं—जैसा यीशु है, वैसे ही हम भी हैं (1 यूहन्ना 4:17)—और उसी के अनुसार संसार में जीवन बिताते हैं।

(vii) हम परमेश्वर के सामने दोष और न्याय के भय से मुक्त हो जाते हैं।

(viii) हम उसके प्रति प्रेम से भर उठते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

उपरोक्त आठों क्षेत्रों में आप कैसे आगे बढ़ रहे हैं? (कुछ समय लेकर प्रार्थना करिए और परमेश्वर के सामने यह स्वीकार करिए कि पिता के प्रेम के कारण आप इन सब बातों को कर सकते हैं।)

3) आज्ञाकारिता में चलना पिता के प्रेम में बने रहने से किस प्रकार जुड़ा हुआ है?

6
वह प्रेम जो अनुशासन देता है

पिता के प्रेम में बने रहने का एक महत्वपूर्ण पहलू उसके प्रेमपूर्ण अनुशासन और सुधार से सम्बन्धित है। जब हम समझते हैं कि पिता हमें क्यों अनुशासित करते हैं और जब वह हमें अनुशासित करते हैं तब उनका हृदय कैसा होता है, तब हम सही प्रकार से प्रत्युत्तर दे पाएँगे। परमेश्वर का प्रेमपूर्ण सुधार कोई ऐसी बात नहीं है जिससे डरना चाहिए या जिससे दूर भागना चाहिए। हमारे पिता का प्रेमपूर्ण सुधार ऐसी बात है जिसका स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि यह हमारे लाभ के लिये है।

जिससे पिता प्रेम करते हैं, उसे वह अनुशासित भी करते हैं

इब्रानियों 12:4-13

4तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लहू बहा हो;
5और तुम उस उपदेश को, जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो: "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़।
6क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।"
7तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?
8यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे।
9फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें।
10वे तो अपनी–अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी

हो जाएँ।
[11]वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।
[12]इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो,
[13]और अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए पर भला चंगा हो जाए।

"ताड़ना," "डांटना," और "कोड़े लगाना" जैसे शब्द कठोर और रूखे प्रतीत होते हैं। "ताड़ना देता है" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द *'पाइदेवो'* है, जिसका अर्थ है "बालक का पालन-पोषण करना, शिक्षा देना, निर्देश देना, सिखाना, प्रशिक्षण देना और अनुशासन में रखना" और यह सब इस प्रक्रिया का भाग है। "ताड़ना" (यूनानी *'पाइदेइया'*) के लिए यही शब्द इफिसियों 6:4 में भी प्रयोग किया गया है, जहाँ पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण प्रभु की "शिक्षा" में करते हैं। "डांटना" के लिए यूनानी शब्द *'एलेग्खो'* है, जिसका अर्थ है "दोषी ठहराना, समझाना, सुधारना, दोष बताना" और यही शब्द यूहन्ना 16:8 में पवित्र आत्मा के विषय में प्रयोग किया गया है कि वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा या समझाएगा। "कोड़े लगाने" के लिए यूनानी शब्द *'मास्तिगो'* है, जिसका अर्थ है कोड़े मारना, दंड देना, पीटना। ध्यान रखें कि ये शब्द एक पिता द्वारा अपने बच्चों को अनुशासन में रखने के संदर्भ में प्रयोग किए गए हैं, इसलिए इन्हें उसी संदर्भ में समझना चाहिए। इसलिए, प्रभु की ताड़ना का संबंध है

(A) *पाइदेवो*—पिता की अपने बच्चों के प्रति प्रेमपूर्ण शिक्षा, पालन-पोषण, प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से,

(B) *एलेन्खो*—पिता द्वारा प्रेमपूर्वक अपने बच्चों को यह बताने से कि क्या गलत है और उन्हें जो सही है उसकी ओर ले जाने से, और

(C) *मास्तिगो*—पिता द्वारा प्रेमपूर्वक बच्चों को अनुशासन में रखने से ताकि वे आज्ञाकारिता के स्थान में आ सकें। जैसा कि हम अपने स्वाभाविक जीवन में बच्चों के साथ आसानी से देखते हैं, शिक्षा, प्रशिक्षण, पालन-पोषण और मार्गदर्शन सामान्य रूप से किए जाते हैं। मारना (दंड के साथ प्रशिक्षण देना) केवल तब प्रयोग किया जाता है जब सामान्य प्रक्रिया को ग्रहण नहीं किया जाता या उसका उल्लंघन किया जाता है।

प्रेमपूर्ण शिक्षा और सुधार पिता और संतान के संबंध का सामान्य भाग हैं (इब्रानियों 12:7)। यह परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं, जो हमें अपने पुत्रों और पुत्रियों के समान मानते हैं। उनका सुधार और अनुशासन हमारे प्रति उनके प्रेम की अभिव्यक्ति है।

हमारे स्वर्गीय पिता हमें अपने प्रेम और हमारे भले के कारण सुधारते और अनुशासन में रखते हैं। वह यह हमारे लाभ और भलाई के लिए करते हैं (इब्रानियों 12:10)। वह ऐसा इसलिए करते हैं ताकि हमें वहाँ से जहाँ हम हैं, उस ऊँचे स्थान तक ले जाएँ, जहाँ वह चाहते हैं कि हम हों।

जब परमेश्वर हमें सुधारते हैं, तब वह ऐसा हमें नष्ट करने, अपमानित करने, हमारा मूल्य घटाने या हमें नीचे गिराने के लिए नहीं करते। उनका प्रेमपूर्ण सुधार सदैव हमें ऊपर उठाने और हमें वैसा व्यक्ति बनने में सहायता देने के लिए आता है जैसा बनने के लिए हमारा उद्देश्य था। उनका सुधार गरिमा, स्वीकार्यता और अनुग्रह के साथ आता है।

पिता के प्रेम का यह पक्ष कुछ समय के लिए पीड़ादायक हो सकता है (इब्रानियों 12:11)।

सुधार तब आवश्यक हो जाता है जब हम आज्ञाकारिता के स्थान

से बाहर निकल जाते हैं—अर्थात् जब हम उनके प्रेम में बने रहने और उसी में जीवन व्यतीत करने के स्थान से बाहर चले जाते हैं।

सुधार का अर्थ है कि परमेश्वर हमें अपने वचन, अपनी इच्छा और अपने मार्गों के अनुसार सीधा कर रहे हैं। वह हमें फिर से अपने प्रेम में बने रहने के स्थान में लौटा रहे हैं। वह हमें फिर से उस स्थान में ले आ रहे हैं जहाँ हम उनके प्रेम में विश्राम करते हुए जीवन जीते हैं।

सुधार के प्रति सही प्रतिक्रिया यह है कि हम अपने स्वर्गीय पिता के प्रति झुकें और समर्पित हों (इब्रानियों 12:9)। यही वह समय है जब हम कहना सीखते हैं, *"मेरी नहीं, परन्तु आपकी इच्छा पूरी हो।"*

परमेश्वर हमें अपने वचन के द्वारा, अपने आत्मा के द्वारा, अन्य लोगों के द्वारा और कभी-कभी परिस्थितियों एवं हालातों के द्वारा सुधारते हैं। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बात करते हैं और शिक्षा, प्रशिक्षण तथा सुधार प्रदान करते हैं (2 तीमुथियुस 3:16,17)। परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें संपूर्ण सत्य में ले चलता और मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 16:13), जिसका अर्थ यह भी है कि वह हमें भूल से बचाता और सुधारता है। परमेश्वर अन्य लोगों के द्वारा भी हमारे हृदयों में अपनी सलाह और इच्छा प्रकट करते हैं, विशेषकर उन भक्तिमय लोगों के द्वारा जिन्हें उन्होंने हमारे जीवन में हमें प्रभावित करने के लिए रखा है। हमें इन तीनों माध्यमों—उनके वचन, उनके आत्मा और अन्य लोगों—के द्वारा परमेश्वर के पालन-पोषण, शिक्षा और सुधार को ग्रहण करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे समय भी आते हैं जब परमेश्वर प्रेमपूर्वक उन परिस्थितियों के द्वारा हमें अनुशासन में रखते हैं जिन्हें वह हमारे लिए निर्धारित करते हैं। (**ध्यान दें:** हम परिस्थितियों और हालातों के लिए "कभी-कभी" कह रहे हैं, क्योंकि कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें शत्रु अर्थात् शैतान हमारे विरुद्ध लाता है, और हमें उन पर अधिकार पाना तथा विजय प्राप्त करनी होती है। फिर कुछ

परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जो हमारे अपने कार्यों का परिणाम होती हैं, जिनकी जिम्मेदारी हमें लेनी होती है और आवश्यक परिवर्तन करने होते हैं।)

उनके प्रेमपूर्ण अनुशासन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया यह निर्धारित करेगी कि हम वृद्धि, परिपक्वता और पवित्रता के अगले स्तर तक कैसे प्रगति करेंगे। यह उनके प्रेम में बने रहने और अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में आगे बढ़ने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रतिदिन हम जो सबसे उत्तम कार्य कर सकते हैं उनमें से एक यह है कि हम परमेश्वर की ओर देखें, और उनसे प्रार्थना करें, कि-यदि कोई बात आज्ञाकारिता से हटकर हो गई हो तो वह हमें अपने साथ फिर से सीधा कर दें।

आप स्वयं अपने प्रहरी बन सकते हैं। अपने हृदय, अपने विचारों और अपने कार्यों पर ध्यान रखिए। उनके प्रेम में बने रहिए। स्मरण रखिए कि उनका सामर्थी अनुग्रह और उनके पवित्र आत्मा की सुदृढ़ संगति सदैव आपके साथ है ताकि आप उनके प्रेम में बने रह सकें (2 कुरिन्थियों 13:14)। जिस क्षण हम अपने आपको आज्ञाकारिता के स्थान से बाहर जाते हुए देखें, यहाँ तक कि पिता के प्रेम में बने रहने के स्थान से एक इंच भी बाहर कदम रखते हुए देखें, हमें स्वयं को जाँचना चाहिए और तुरंत उनके प्रेम में बने रहने के उस स्थान में लौट आना चाहिए।

जीवन में ऐसे समय आएँगे जब हमें कठोरता और अनुशासन के साथ कुछ बातों का सामना करना होगा। उदाहरण के लिए, माता-पिता के रूप में, या कक्षा में एक शिक्षक के रूप में, या कर्मचारियों को संभालने वाले एक पेशेवर के रूप में आदि, ऐसे समय आएँगे जब हमें सामना करना होगा, सुधारना होगा, समझाना और ताड़ना देना होगा और जो आवश्यक या अपेक्षित है उसे

करवाना होगा। हम इन कठिन बातों को एक उत्तरदायी अगुवे की दृढ़ता के साथ संभालते हैं, और साथ ही पिता के प्रेम के अधीन भी बने रहते हैं। परमेश्वर का आत्मा हमें ऐसी कठिन परिस्थितियों को परमेश्वर के बिनाशर्त प्रेम के साथ संभालने में सामर्थ देगा, जबकि हम सुधार और अनुशासन को भी लागू करेंगे। यह भी पिता के प्रेम की एक अभिव्यक्ति है।

पिता के प्रेमपूर्ण अनुशासन के विषय में गलत धारणाएँ

अक्सर लोगों के मन में पिता के प्रेमपूर्ण सुधार के विषय में अजीब गलत धारणाएँ होती हैं। वे बीमारी, विपत्ति, दुर्घटनाएँ, असफलताएँ, दुखद घटनाएँ, गरीबी आदि को पिता के प्रेमपूर्ण अनुशासन, शिक्षा या सुधार का परिणाम मान लेते हैं। यहाँ तक कि हम पृथ्वी के माता-पिता, अपनी कमियों के बावजूद, अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं करेंगे। कौन-सा सांसारिक माता-पिता, अपने बच्चे को सिखाने, शिक्षा देने या उसका पालन-पोषण करने की इच्छा रखते हुए, उसे बीमारी, दुर्घटना, दुखद घटना आदि जैसी कठिन परिस्थितियों से गुज़ारेगा ताकि वह परिपक्व हो, उसका चरित्र बने या वह बड़ा हो जाए? कोई भी नहीं! तब हमारी आत्मिक समझ कितनी असंगत और अतार्किक हो जाती है जब हम ऐसी बातों (बीमारी, विपत्ति, दुर्घटनाएँ, असफलताएँ, दुखद घटनाएँ, गरीबी आदि) को एक असीम प्रेम करने वाले स्वर्गीय पिता के साथ जोड़ते हैं, मानो ये हमारे जीवन में उनके प्रेमपूर्ण अनुशासन की अभिव्यक्तियाँ हों! प्रभु यीशु ने बहुत स्पष्ट रूप से बताया कि हमारे स्वर्गीय पिता पृथ्वी के माता-पिताओं से अनंत गुणा उत्तम हैं। *"तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो वह उसे पत्थर दे? या मछली माँगे, तो उसे साँप दे? अत: जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?"* (मत्ती 7:9-11)

हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेमपूर्ण अनुशासन और विद्रोह तथा पश्चातापहीन, जानबूझकर किए गए पाप के लिए परमेश्वर के न्याय के बीच बहुत बड़ा अंतर है। विश्वासियों के रूप में अपने जीवन के दौरान, हम सामान्यतः पिता की आज्ञाकारिता में चलते हैं और उस स्थान में नहीं आते जहाँ हम परमेश्वर के न्याय के योग्य ठहरें। यदि हम पाप भी कर बैठें, तो हम जानते हैं कि तुरंत परमेश्वर के साथ बातों को कैसे ठीक करना है। जब हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलते हैं, तब एक विरोधी अर्थात् शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ अपनी चालों और योजनाओं के साथ हमारे विरुद्ध आती हैं। हमें शत्रु के कार्यों को वैसा ही पहचानना चाहिए जैसे वे वास्तव में हैं, और मसीह में अपने अधिकार के स्थान का उपयोग करते हुए हमें उनका विरोध करना, उन पर जय प्राप्त करना और ऐसी बातों पर निरंतर विजय में चलते रहना चाहिए। हमें शत्रु के दुष्ट कार्यों—चोरी करना, हत्या करना और नाश करना, बीमारी, विपत्ति, दुर्घटनाएँ, असफलताएँ, दुखद घटनाएँ, गरीबी आदि—को परमेश्वर के साथ नहीं जोड़ना चाहिए।

चिंतन

1) एक प्रेमपूर्ण स्वर्गीय पिता अपने बच्चों को अनुशासन में क्यों रखेंगे?

2) इब्रानियों 12:5,6 में उल्लिखित ताड़ना, डांटना और कोड़े लगाना, एक पिता द्वारा अपने बच्चों के साथ व्यवहार करने के संदर्भ में क्या अर्थ रखते हैं? उसका संक्षेप में वर्णन करिए।

3) वे चार तरीके कौन-से हैं जिनके द्वारा परमेश्वर अपने प्रेमपूर्ण सुधार को हमारे जीवन में कार्यान्वित करते हैं? विचार करिए कि आप स्वयं को इनके प्रति कैसे संवेदनशील बना सकते हैं ताकि आप अपने जीवन में परमेश्वर के प्रेमपूर्ण सुधार को शीघ्र पहचानें और उसके प्रति तुरंत प्रतिक्रिया दें।

7
हमारे स्वर्गीय पिता के समान बनना

स्वर्गीय पिता के प्रेम का अनुभव करना न केवल हमारी प्रेम प्राप्त करने की क्षमता को पुनर्स्थापित करता है, बल्कि हमारी प्रेम करने की क्षमता को भी पुनर्स्थापित करता है। हम प्रेम में चल सकते हैं, ऐसे रीति से जो हमारी अपनी सामर्थ से कहीं बढ़कर है।

उनका प्रेम हम में और हमारे द्वारा

इफिसियों 5:1,2

[1]इसलिये प्रिय बालकों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो,
[2]और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।

हमें अपने स्वर्गीय पिता का अनुकरण करना है। जिस पहले पहलू में हमें उनका अनुकरण करने के लिए बुलाया गया है, वह है प्रेम में चलना। इसका मानदण्ड मसीह और उनका प्रेम तथा बलिदान का उदाहरण है। वही करिए जो यीशु ने किया। उन्होंने हमें दिखाया कि प्रेम में चलना क्या होता है।

परमेश्वर हमें ऐसा कुछ करने की आज्ञा नहीं देंगे जो संभव न हो (अप्राप्य हो)। न ही वह हमें ऐसा कुछ करने की आज्ञा देंगे जिसके लिए वह हमें सामर्थ न दें। इसलिए, उनका यह निर्देश कि हम उनका अनुकरण करें और वैसे ही प्रेम में चलें जैसे मसीह चले, संभव है, क्योंकि वह हमें ऐसा करने की सामर्थ प्रदान करते हैं।

जब हम अपने स्वर्गीय पिता का अनुकरण करते हैं और वैसे ही

प्रेम में चलते हैं जैसे मसीह चले, तब यह ऐसा बलिदान होता है जो हमारे पिता को प्रसन्न करता है, एक अच्छी सुगंध के समान, ठीक वैसे ही जैसे पिता यीशु के बलिदान से प्रसन्न हुए थे।

प्रेम में चलना सबसे उत्कृष्ट मार्ग में चलना है

1 कुरिन्थियों 12:31

क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो। परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।

1 कुरिन्थियों 13:1-13

1यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ।
2और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं।
3यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।
4प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं,
5वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
6कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
7वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
8प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
9क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी;
10परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं।
12अभी हमें दर्पण में धुँधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने–सामने देखेंगे; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से

पहिचानूँगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ।
[13]पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सबसे बड़ा प्रेम है।

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 12 में आत्मा के वरदानों और देह में सदस्यता संबंधी कार्यों (अगुवाई, शिक्षा देना, प्रबंध करना आदि) के विषय में समझाने के बाद, हमें इन वरदानों की अभिलाषा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, परन्तु यह भी कहते हैं कि वह हमें *"एक और भी उत्तम मार्ग"* (1 कुरिन्थियों 12:31)अर्थात् ऐसा मार्ग दिखाना चाहते हैं जो और भी बेहतर और कहीं अधिक श्रेष्ठ है। यहाँ इसका आशय यह है कि लोगों की सेवा करने और मसीह की देह की सेवा करने का एक और भी उत्तम मार्ग है—ऐसा मार्ग जो आत्मा के वरदानों और सदस्यता संबंधी कार्यों के उपयोग से भी बढ़कर है। वह हमें परमेश्वर के प्रकार के प्रेम में चलने की ओर ले जाते हैं।

पौलुस 1 कुरिन्थियों 13 के पहले भाग में समझाते हैं कि यदि हम आत्मा के वरदानों का उपयोग करें, देह के सदस्यता संबंधी कार्यों को करें, और यहाँ तक कि अपने शरीर को जलाए जाने के लिए भी दे दें, परन्तु यदि ये सब परमेश्वर के प्रकार के प्रेम से प्रेरित और संचालित न हों, तो ये सब व्यर्थ हैं, कुछ भी नहीं हैं और इनका कोई लाभ नहीं! यह दिखाता है कि सेवा और सेवकाई करते समय प्रेम में बने रहना कितना महत्वपूर्ण है।

जो कुछ भी हम करें, वह परमेश्वर के प्रकार के प्रेम द्वारा संचालित, निर्देशित और प्रेरित होना चाहिए। उसे पिता के प्रेम में विश्राम करते हुए और उसी में जीवन जीते हुए करिए। जैसा कि पौलुस वचन 4-8 में समझाते हैं, यदि हम अधीर, निर्दयी, डाह करने वाले, डींग मारने

वाले, घमण्डी, असभ्य व्यवहार करने वाले, स्वार्थी, स्वयं को बढ़ावा देने वाले, आत्मकेंद्रित, चिड़चिड़े, क्रोधित, बुरी भावना रखने वाले, अधर्म या असत्य को बढ़ावा देने वाले हैं, तो हम प्रेम द्वारा संचालित, निर्देशित और प्रेरित नहीं हैं। गलत प्रेरणा के साथ आत्मा के वरदानों का उपयोग करना व्यर्थ है, वह खाली है और कोई लाभ नहीं पहुँचाता।

प्रेम आत्मा के वरदानों के उपयोग, सेवकाई के कार्यों, दान-पुण्य के कार्यों, यहाँ तक कि विश्वास और आशा से भी श्रेष्ठ इसलिए है क्योंकि प्रेम स्थायी है। एक समय आएगा जब केवल प्रेम ही कार्य में बना रहेगा। बाकी सब निष्क्रिय हो जाएँगे और उनका उपयोग नहीं रहेगा।

इसका यह अर्थ नहीं कि हमें आत्मा के वरदानों या अपने सदस्यता संबंधी कार्यों का उपयोग नहीं करना चाहिए। जब हम अपनी प्राथमिकता को सही रखते हैं—सबसे पहले और मुख्य रूप से प्रेम में चलना—तब हम आत्मा के वरदानों और सदस्यता संबंधी कार्यों के उपयोग का अनुसरण करते हैं, जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:1 में बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं।

स्मरण रखिए, विश्वास प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलातियों 5:6)।

[**ध्यान दें:** 1 कुरिन्थियों 13:8 में, भविष्यद्वाणियों (*"भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी"*) और ज्ञान (*"ज्ञान हो, तो मिट जाएगा"*) के संदर्भ में, वही यूनानी शब्द *'कटार्गेओ'* का अनुवाद "समाप्त हो जाएंगी" और "मिट जाएगा" किया गया है। इसका अर्थ है कि ये वरदान अब उपयोग में नहीं रहेंगे, अर्थात् निष्क्रिय हो जाएँगे।]

प्रेम कभी असफल नहीं होता

1 कुरिन्थियों 13:8
प्रेम कभी टलता नहीं;

"असफल" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द, जो प्रेम के संबंध में प्रयोग किया गया है, *'एकपिप्टो'* है, जिसका अर्थ 'स्ट्रॉन्स हिब्रू एंड ग्रीक डिक्शनरी' के अनुसार है *"अपने मार्ग से भटक जाना; रूपक रूप में हानि उठाना, निष्प्रभावी हो जाना"* और 'थेयर्स ग्रीक डेफिनिशन्स' के अनुसार इसमें *"ऐसे स्थान से गिर जाना जहाँ स्थिर न रहा जा सके, अपने स्थान से गिर जाना, शक्तिहीन हो जाना, भूमि पर गिर पड़ना, प्रभावहीन हो जाना"* जैसे अर्थ सम्मिलित हैं।

यदि हम इन सब बातों को एक साथ रखें, तो हमें यह समझ प्राप्त होती है कि जब हम प्रेम में चलते हैं, तब हम मार्ग से नहीं भटकेंगे। प्रेम में चलना सही मार्ग, सही पथ पर बने रहना है। साथ ही, जब हम प्रेम में चलते हैं, तब हम शक्तिहीन नहीं होंगे, न ही अपमानित किए जाएँगे और न ही निष्फल बनेंगे। इसके विपरीत, हमारा प्रभाव और असर होगा।

इसलिए, आइए समझें कि जब हम प्रेम में चलते हैं, तब हम ऐसे मार्ग पर चल रहे होते हैं जहाँ हम असफल नहीं होंगे। जो कुछ भी आप परमेश्वर के प्रकार के प्रेम से प्रेरित, निर्देशित और संचालित होकर करेंगे, उसका प्रभाव अवश्य होगा।

पिता के प्रेम में विश्राम करना और उसी में जीवन जीना आपको सदैव सही मार्ग पर बनाए रखेगा।

उनके प्रेम को ग्रहण करना हमारी प्रेम करने की क्षमता को बढ़ाता है

रोमियों 5:3-5

[3]केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज,

[4]और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है;

[5]और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है

उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

प्रेरित पौलुस हमारे वर्तमान जीवन के विषय में लिख रहे हैं, जब हम विश्वासियों के रूप में कठिनाइयों से होकर गुजरते हैं, यह जानते हुए कि ये हमारे भीतर धीरज (सहनशीलता) उत्पन्न करती हैं, और इससे हमारा चरित्र बनता है, और इससे हमारी आशा, अर्थात् आने वाली बातों की हमारी प्रत्याशा और भी दृढ़ होती है।

अब जो आशा या प्रत्याशा हमारे पास है, वह हमें निराश नहीं करती। इसका शाब्दिक अर्थ है कि यह आशा हमें लज्जित नहीं करती, या हम अपनी आशा के कारण लज्जित नहीं होते, क्योंकि यहीं और अभी हम परमेश्वर के प्रेम—पिता के असीम और निष्कपट प्रेम का अनुभव कर रहे हैं। यह प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में उमड़ते और बहते हुए रीति से उंडेला गया है।

यह प्रेम—पिता का प्रेम—हमारे हृदयों में बहुतायत से और उमड़ता हुआ भरा हुआ है, ताकि हम स्वयं उसका अनुभव करें और उसका आनन्द लें, और साथ ही उसे दूसरों तक भी बाँटें।

पिता के प्रेम के हमारे हृदयों में बहुतायत से भरे होने के कारण, हम क्लेश में भी आनन्दित रहते हैं और अपनी आशा में निर्लज्ज रहते हैं।

पिता के प्रेम के हमारे हृदयों में उमड़ते रहने के कारण, अब इस प्रेम से दूसरों को प्रेम करने की हमारी क्षमता अत्यधिक बढ़ जाती है। अब पवित्र आत्मा हमें सामर्थ देते हैं कि हम दूसरों से वैसे ही प्रेम करें जैसे वह प्रेम करते हैं। हम वैसे प्रेम कर सकते हैं जैसे परमेश्वर प्रेम करते हैं! हम वही करते हैं जो प्रेम करता। हम लोगों का न्याय करना (नकारात्मक रीति से), आलोचना करना और दोषी ठहराना छोड़ देते हैं। हम प्रेम में सत्य बोलते हैं, सुधारते हैं और मार्गदर्शन करते हैं।

कठिन परिस्थितियों में भी हम लोगों के प्रति आशावान, विश्वास रखने वाले और उन्हें उत्साहित करने वाले बनते हैं।

कल्पना करिए कि यही प्रेम पति-पत्नी के संबंधों में भी प्रवाहित हो। वास्तव में, परमेश्वर के वचन में हमें ऐसा ही करने की आज्ञा दी गई है। वैसे प्रेम करिए जैसे मसीह ने प्रेम किया। पिता के प्रेम से प्रेम करिए।

इफिसियों 5:25
हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया

हमारे विवाह और हमारे घर इस पीड़ित संसार में प्रेम के नखलिस्तान बन जाएँगे। पति, पत्नी और बच्चे घर पर रहने और एक साथ रहने की लालसा करेंगे, क्योंकि वहाँ पिता के प्रेम की बहुतायत बह रही होगी। घर-शरण, सांत्वना, सामर्थ और चंगाई का स्थान बन जाएगा।

परमेश्वर के समान प्रेम करना, परमेश्वर को प्रकट करता है

1 यूहन्ना 4:12
परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।

परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा। जब हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तब परमेश्वर हम में निवास करते हैं और हमारे द्वारा दिखाई देते हैं। जब हम दूसरों से उनके प्रेम के साथ प्रेम करते हैं, तब परमेश्वर हमारे द्वारा प्रकट होते हैं। परमेश्वर के समान प्रेम करना परमेश्वर को प्रदर्शित करता है। यह पिता के प्रेम की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति के द्वारा परमेश्वर के प्रकटीकरण की एक झलक प्रस्तुत करता है।

मलाकी 4:5,6
5"देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा।
6वह माता–पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता–पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ।"

प्रभु के दिन से पहले परमेश्वर की गतिविधियों में से एक यह है कि पिताओं का मन बच्चों की ओर और बच्चों का मन पिताओं की ओर फेरा जाएगा। यह इतना महत्वपूर्ण है कि यदि ऐसा न हो, तो पृथ्वी शापित हो जाएगी। आइए इसे स्वाभाविक परिवार और स्थानीय कलीसिया के परिवार दोनों के संदर्भ में विचार करें।

बहुतों के लिए, परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता के निष्कपट, पालन-पोषण करने वाले और स्नेहमय प्रेम की पहली झलक उनके अपने माता-पिता के द्वारा मिलती है। और जब यह संबंध टूट जाता है, तब उन्हें समझ नहीं आता कि वे उस प्रकार का प्रेम और कहाँ पाएँगे। माता-पिता के रूप में, कभी-कभी हम या तो स्वर्गीय पिता के प्रेम को गलत रूप में प्रस्तुत करते हैं या अपने बच्चों को उनके प्रेम का कोई संकेत ही नहीं देते। हम में से कुछ पिता गलत सोचते हैं कि स्नेह या भावनाएँ प्रकट करना कमजोरी का चिन्ह है और यह "पुरुष" होने के अनुकूल नहीं है। यह सत्य नहीं है! हमारे परिवार को हम पिताओं में पिता के प्रेम, उनकी कोमलता, उनकी नम्रता, उनकी भलाई, उनकी दया, उनके धैर्य और उनकी कृपा का प्रकटीकरण देखना चाहिए। हमारे परिवार को हमारे भीतर जो दिखाई देता है, उसके कारण उन्हें परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम में और गहराई तक खिंचना चाहिए।

यह बात कलीसिया के परिवार के विषय में भी सत्य है। जब अविश्वासी, भटके हुए और उचक्के पुत्र कलीसिया समुदाय के

"पिताओं" (और "माताओं") में पिता के प्रेम को देखेंगे, तब वे घर लौट आएँगे। स्थानीय कलीसिया ऐसा स्थान होना चाहिए जहाँ टूटे हुए, खोए हुए और पीड़ित लोग स्वागत पाएँ, और जहाँ पिता के प्रेम के द्वारा उनका पालन-पोषण होकर वे संपूर्णता के स्थान तक पहुँचें।

परमेश्वर के समान प्रेम करना उनके प्रेम के प्रकटीकरण को बढ़ाता है

1 यूहन्ना 4:12
परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।

जब हम दूसरों से उनके प्रेम के साथ प्रेम करते हैं, तब उनका प्रेम हम में सिद्ध, पूर्ण और अपने उद्देश्य को पूरा करता है। हम अपने प्रति पिता के प्रेम की और भी गहरी समझ में बढ़ते हैं और उनके प्रेम को हमारे भीतर अपना उद्देश्य पूरा करने देते हैं।

पिता के प्रेम की समझ और प्रकटीकरण में बढ़ने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है वैसे प्रेम करना जैसे वह प्रेम करते हैं। जब हम परमेश्वर के समान प्रेम करने का चुनाव करते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी इसे व्यवहारिक रूप से करते हैं, तब उनके प्रेम का हमारा व्यक्तिगत प्रकटीकरण निरंतर बढ़ता जाता है। जैसे-जैसे दूसरों से प्रेम करने की हमारी क्षमता बढ़ती है, वैसे-वैसे हम अपने प्रति उनके प्रेम की महानता को और अधिक समझने लगते हैं। जितना अधिक हम परमेश्वर को दूसरों के प्रति हमारे प्रेम को बढ़ाने देते हैं, उतना ही हमारे लिए उनके प्रेम का प्रकटीकरण बढ़ता है। जैसे-जैसे हम उनके प्रेम को उंडेलते हैं, वैसे-वैसे हम उनके प्रेम के और अधिक उंडेले जाने का अनुभव करते हैं। उनके प्रेम का और बड़ा प्रकटीकरण हमारा हो जाता है।

प्रेम में चलना परमेश्वर के साथ एकता में चलना है

1 यूहन्ना 4:16
जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए और हमें उसका विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

1 यूहन्ना 4:16 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल)
और हम स्वयं उस प्रेम को जानते और उस पर विश्वास करते हैं जो परमेश्वर हमसे रखते हैं। परमेश्वर प्रेम है, और जो लोग प्रेम में जीवन बिताते हैं, वे परमेश्वर के साथ एकता में जीवन बिताते हैं और परमेश्वर उनके साथ एकता में रहते हैं।

जब हम पिता के प्रेम में निवास करते हैं और उसी में जीवन जीते हैं, तब हम परमेश्वर में बने रहते हैं और परमेश्वर हम में बने रहते हैं। जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ एकता में चलते हैं। हम परमेश्वर में और परमेश्वर के द्वारा चल रहे होते हैं, और परमेश्वर हम में और हमारे द्वारा कार्य कर रहे होते हैं। यह सत्य अत्यंत सामर्थी है। जब हम पिता के प्रेम में विश्राम करते हैं और उसी में जीवन जीते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ एकता में चलते हैं। जब हम प्रेम में चलते हैं, तब परमेश्वर हमारे साथ चलते हैं। जब हम प्रेम में कार्य करते हैं, तब परमेश्वर हमारे साथ प्रेम में कार्य करते हैं। प्रेम में, जब हम स्पर्श करते हैं, तब परमेश्वर स्पर्श करते हैं। प्रेम में, जब हम बोलते हैं, तब परमेश्वर बोलते हैं। जब हम परमेश्वर के प्रकार के प्रेम में चलते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ एकता में चलते हैं, और इसलिए हम अजेय होते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जो शत्रु हमें रोकने, गिराने या पीछे धकेलने के लिए कर सके।

आइए इसे अपने जीवन की रीति बना लें। आइए हम पिता के प्रेम में विश्राम करें, उसी में जीवन जीएँ और उसी से कार्य करें। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम परमेश्वर में चल रहे होते हैं और परमेश्वर हम में

और हमारे द्वारा कार्य कर रहे होते हैं।

चिंतन

1) कुछ ऐसे परिवर्तनों को लिखिए जिनके लिए आप प्रभु से सहायता माँगेंगे ताकि आप हमारे स्वर्गीय पिता का अनुकरण कर सकें और वैसे प्रेम कर सकें जैसे वह प्रेम करते हैं।

2) हमने प्रेम में चलने के विषय में कई महत्वपूर्ण बातों पर विचार किया है।

- प्रेम में चलना सबसे उत्तम मार्ग में चलना है।
- प्रेम कभी असफल नहीं होता।
- उनके प्रेम को ग्रहण करना हमारी प्रेम करने की क्षमता को बढ़ाता है।
- परमेश्वर के समान प्रेम करना परमेश्वर को प्रकट करता है।
- परमेश्वर के समान प्रेम करना उनके प्रेम के प्रकटीकरण को बढ़ाता है।
- प्रेम में चलना परमेश्वर के साथ एकता में चलना है।

इनमें से प्रत्येक कथन को अपने जीवन से जोड़कर व्यक्तिगत बनाइए और एक या दो वाक्य लिखिए, यह बताते हुए कि आप इन्हें अपने जीवन की परिस्थिति में कैसे लागू करेंगे।

- क्योंकि प्रेम में चलना सबसे उत्तम मार्ग में चलना है, इसलिए मैं ...
- क्योंकि प्रेम कभी असफल नहीं होता, इसलिए मैं जानता / जानती हूँ कि मैं ...

- क्योंकि उनके प्रेम को ग्रहण करना मेरी प्रेम करने की क्षमता को बढ़ाता है, इसलिए मैं जानता / जानती हूँ कि मैं ...
- क्योंकि परमेश्वर के समान प्रेम करना परमेश्वर को प्रकट करता है, इसलिए मैं ...
- क्योंकि परमेश्वर के समान प्रेम करना, उनके प्रेम के प्रति मेरी समझ और प्रकाशन को बढ़ाता है, इसलिए मैं..
- क्योंकि प्रेम में चलना, परमेश्वर के साथ एकता में चलना है, इसलिए मैं..

ऑनलाइन हमसे जुड़ें
(JOIN US ONLINE)

अंग्रेजी
(ENGLISH)

https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
https://instagram.com/allpeopleschurchbangalore
https://facebook.com/apcwo

https://youtube.com/apcbiblecollege
https://instagram.com/apcbiblecollege

https://youtube.com/APCMusicindia

https://www.youtube.com/@apc-free-christian-books

https://youtube.com/@chrysalislifecounseling

https://instagram.com/ChrysalisLifeCounseling

हिंदी
(HINDI)

https://youtube.com/APCHindi
https://www.instagram.com/apc_bangalore_hindi

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" **(रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा " **(रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के बारे में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The End Times
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

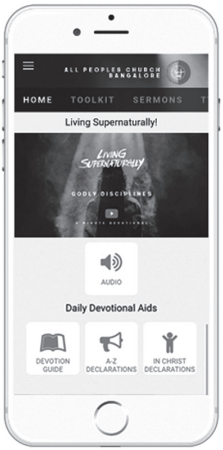

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

बाइबल परमेश्वर के अनेक पहलुओं को प्रकट करती है। इनमें से परमेश्वर के सबसे सामर्थी प्रकटीकरणों में से एक है—पिता के रूप में उनका प्रकटीकरण। परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता हैं। प्रभु यीशु ने हमें परमेश्वर को "हमारे पिता" कहकर पुकारना सिखाया। बाइबल हमारे प्रति पिता के प्रेम को प्रकट करती है। यह पुस्तक पिता के प्रेम पर एक अध्ययन है। परमेश्वर जो प्रेम हमसे करते हैं, उसके विषय में हमारी समझ, इस बात को प्रभावित करती है कि हम परमेश्वर से कैसे प्रेम करते हैं, स्वयं से कैसे प्रेम करते हैं और दूसरों से कैसे प्रेम करते हैं।

परमेश्वर, जो हमारे स्वर्गीय पिता हैं, हमसे बिना शर्त और असीम प्रेम करते हैं। हमारे प्रति पिता के प्रेम की सबसे महान अभिव्यक्ति और प्रदर्शन यीशु मसीह का क्रूस है। जब हम हमारे प्रति पिता के प्रेम को जानते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, उसे ग्रहण करते हैं और उसमें विश्राम पाते हैं, तब सब कुछ बदल जाता है। हम चंगे किए जाते हैं, संपूर्ण बनाए जाते हैं और हमारे सारे टूटेपन तथा बंधनों से स्वतंत्र किए जाते हैं। जब हम पिता के प्रेम में जीवन बिताते हैं, तब हम वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हमसे प्रेम किया गया है। हम स्वतंत्रता से परमेश्वर से प्रेम करते हैं। हम स्वतंत्रता से दूसरों से प्रेम करते हैं। हम जयवन्तों से भी बढ़कर जीवन बिताते हैं और ऐसे लोगों के समान जीते हैं जिन्होंने परमेश्वर के अटूट प्रेम के द्वारा जीवन की सभी चुनौतियों और अन्धकार की शक्तियों पर पूर्ण विजय प्राप्त की है। यह पुस्तक **आपके** लिए है!

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org